Career Companion
A future begins here ...

नई शिक्षा नीति पर आधारित

सामाजिक चेतना एवं पर्यावरण

Teacher's Manual

Class 8

Written by :
Author's Team
(Vidyalaya Prakashan)

Career Companion
A future begins here ...

A Unit of Vidyalaya Prakashan
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
● New Delhi ● Meerut

INDEX

Sl. No.	Book Name	Page No.
1.	भूगोल	3
2.	इतिहास	26
3.	नागरिक शास्त्र	56

पाठ–1 : हमारे संसाधन

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. संसाधन
2. सम्भाव्य संसाधन
3. मानव संसाधन
4. चट्टानें

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. अनवीकरणीय
2. आर्थिक
3. कारक

ग. मिलान करो –

1. सौर ऊर्जा
2. पेड़
3. कोयला
4. सोना व चाँदी की खानें
5. जल
6. मानव

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रत्येक वस्तु जिसका उपयोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जा सकता है, वह संसाधन हैं।
2. ये ही वे संसाधन है, जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं तथा उन्हें सार्थक एवं मूल्यवान बनाते हैं।
3. वे संसाधन जो हमें प्रत्यक्ष रुप से प्रकृति से प्राप्त होते हैं और जिनमे कुछ अधिक नवीनीकरण की आवश्यकता नहीं होती है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।
4. सभी जीवित वस्तुएँ(जिनमें प्राणी और वनस्पति सम्मिलित किये जाते हैं जैसे– पेड–पौधे, घास, पशु, जीव, पक्षी आदि(जैविक संसाधन कहलाते हैं।
5. वे संसाधन जिनका निर्माण मानव स्वयं करता है। मानव–निर्मित संसाधन कहलाते हैं। मनुष्य इनके निर्माण में वातावरण में प्रयुक्त व उपलब्ध वस्तुओं का प्रयोग करता है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. संसाधनों की उपयोगिता के भिन्न–भिन्न कारण होते हैं। कुछ संसाधन आर्थिक उपयोगिता रखते हैं; जैसे:–फसल एवं खनिज। मनोरंजन भी मनुष्य की एक आवश्यकता होती है इसलिए जो संसाधन हमें आनंद, खुशी एवं सुख देते हैं वे भी संसाधन होते हैं। पर्वत, झीलें, प्राकृतिक दृश्य, मरुस्थल आदि भी हमारे संसाधन हैं क्योंकि हम इनके सौंदर्य एवं उपयोगिता का आनंद उठाते हैं। इन संसाधनों की कलात्मक उपयोगिता है।

2. **प्राकृतिक संसाधन** – वे संसाधन जो हमें प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति से प्राप्त होते हैं और जिनमें कुछ अधिक नवीकरण की आवश्यकता नहीं होती है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। जल, वायु, चट्टानें, सूर्य का प्रकाश, ऊर्जा, वन, मिट्टी, खनिज वनस्पति, जीव-जंतु, भूमि आदि प्राकृतिक संसाधन हैं। इन संसाधनों को इनके विकास प्रयोग, उत्पत्ति, भंडारण एवं उपयोग के आधार पर विभिन्न वर्गों में बाँटा गया है। विकास एवं उपयोग के आधार पर संसाधनों को वास्तविक एवं सम्भाव्य संसाधनों में बाँटा गया है।

वास्तविक संसाधन – मानव जिन संसाधनों की मात्राओं से भिज्ञ है तथा वर्तमान में उनका बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहा है, **वास्तविक संसाधन** कहलाते हैं। अफ्रीका स्थित जिम्बाब्बे और जायरे की सोने की खानें, अरब देशों के पेट्रोलियम के कुएँ तथा भारत में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा स्थित मैंगनीज के भंडार वास्तविक संसाधन के अच्छे उदाहरण हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **मानव संसाधन** – किसी भी प्राकृतिक संसाधन का महत्त्व मनुष्य द्वारा प्रयोग विधि पर निर्भर करता है। किसी क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक संसाधन केवल तभी संबंधित क्षेत्र को समृद्धि एवं धन प्रदान कर सकते हैं, जब जनता द्वारा उनका बुद्धिमत्तापूर्वक दोहन किया जाए। अत: अंतिम रूप से मानव सभी संसाधनों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। ये ही वे संसाधन हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं तथा उन्हें सार्थक एवं मूल्यवान बनाते हैं। मानव संसाधनों की गुणवत्ता का निर्धारण उनकी बौद्धिक क्षमता, श्रम अभिवृति आकांक्षाओं तथा इनमें सर्वोपरि सामूहिक इच्छाशक्ति के आधार पर किया जाता है। राष्ट्रीय उन्नति के लिए दृढ संकल्प जनता प्राकृतिक संसाधनों के अभाव पर भी विजय प्राप्त कर लेती है। इसका एक उदाहरण जापान देश है, जिसके नागरिकों ने अपने देश को विश्व उद्योग का नेता बना दिया है; जबकि जापान में उच्च स्तर के लोहे एवं कोयले का अत्यधिक अभाव है, जो औद्योगिक क्रियाकलापों की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। अनेक प्रदेशों में विशाल प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग नहीं हो पाया है; क्योंकि वहाँ के नागरिक आलसी, अकर्मव्य एवं अज्ञानी हैं। इस प्रकार के प्रदेशों के सर्वाधिक उपयुक्त उदाहरण अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं।

ज्ञान को संसाधनों की जननी माना जाता है क्या आप बता सकते हैं क्यों? क्योंकि मनुष्य की भौतिक वस्तुओं को बहुमूल्य एवं उपयोगी ससांधनों में बदलने की योग्यता इनमें सहायक होती है।

मानव- निर्मित संसाधन - वे संसाधन जिनका निर्माण मानव स्वयं करता है। मानव-निर्मित संसाधन कहलाते हैं। मनुष्य इनके निर्माण में वातावरण में प्रयुक्त व उपलब्ध वस्तुओं का प्रयोग करता है बदले में इनका प्रयोग दूसरे संसाधनों के निर्माण में किया जाता है। कभी-कभी प्राकृतिक पदार्थ तब संसाधन बनते हैं जब इनका मूलरूप बदल दिया जाता है। लौह अयस्क तब तक संसाधन नहीं था जब तक लोगों ने उससे लोहा बनाना नहीं सीख लिया। लोग प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इमारतों, मशीनों, उपकरणों, औजारों एवं अन्य आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में करते हैं जो मानव निर्मित संसाधन के उदाहरण हैं।

2. **संसाधनों का संरक्षण** - किसी भी विकासात्मक गतिविधि में संसाधनों की जीवंत भूमिका होती है; लेकिन संसाधनों का अतार्किक उपभोग एवं अत्यधिक दोहन अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है। इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने के लिए संसाधनों का अनेक स्तरों पर संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। संसाधनों के संरक्षण से तात्पर्य संसाधनों का आर्थिक एवं क्षय रहित प्रयोग है। संसाधनों के संरक्षण से अभिप्राय: उनका अतिप्रयोग, दुरुपयोग एवं असामयिक प्रयोग से बचाव करते हुए उनके न्यायसंगत प्रयोग के लिए प्रेरित करना है। संसाधनों के सरंक्षण को प्राकृतिक संसाधनों के प्रति उत्तरदायी ढंग से देखा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य एक ओर सांस्कृतिक तथा सामाजिक-आर्थिक तंत्र का सुनियोजित एवं सर्वांगीण अंतर संबंधों का विकास है तथा दूसरी ओर प्राकृतिक तंत्र है। जीवधार्य विकास से हमारा आशय संसाधनों के बुद्धिमतापूर्ण प्रयोग से है। इसका मुख्य उद्देश्य पारिस्थितिक संतुलन को नष्ट किए बिना मानव की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। संसाधनों के संरक्षण एवं जीवधार्य विकास के कुछ सिद्धांत निम्नलिखित हैं -

   1. बिना किसी उपव्यय के प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग बुद्धिमत्ता पूर्ण तरीके से किया जाना चाहिए।
   2. इसका लक्ष्य संसाधनों का सुनियोजित एवं सर्वांगीण विकास होना चाहिए।
   3. यह एक ऐसी विचार धारा है, जो व्यक्तियों को संसाधनों के दुरुपयोग, अतिप्रयोग तथा असामायिक प्रयोग से रोककर उनका आर्थिक रूप से प्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है।
   4. संसाधन मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं।

पाठ–2 : प्राकृतिक आपदाएँ

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. ये सभी
2. ये सभी
3. सूखा
4. उत्तरी गोलार्द्ध में
5. 1940 के दशक में

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. तीन
20 उपहिमालय
3. आँधी

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✗
2. ✓
3. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. आपदा प्राकृतिक या मानव–जनित भयावह घटना या संकट है जिसके कारण मानव को भौतिक और पर्यायवरणीय हानि का सामना करना पडता है।
2. आपदाएँ दो प्रकार की होती हैं–
   1. प्राकृतिक आपदाएँ 2. मानवीकृत आपदाएँ।
3. धरातल की आन्तरिक गतिविधियों एवं हलचल के कारण धरती के हिलने या काँपने को भूकंप कहते हैं। इसे भूचाल या हल्लन के नाम से भी जानते हैं।
4. बाढ पर नियंत्रण करने के लिये नदियों पर बाँध बनाये जाते हैं, घास एवं वृक्षारोपण किया जाता है तथा बाँधों के समीप झील बनाकर जल भण्डारित किया जाता है जिससे पानी नदी के किनारों से बाहर नहीं जा पाता।
5. ज्वालामुखी तीन प्रकार के होते हैं– सक्रिय, सुषुप्त और शांत।
6. नदी के किनारों से ऊपर की और जल के बहने को बाढ कहते हैं।
7. वर्षा, जल तथा नमी की कमी की वायुमण्डलीय दशा को सूखा कहते हैं।
8. धूल, मिट्टी, तिनके, कागज के टुकडे समेटे हुए चक्करदार तेज गति वाली हवाएँ चक्रवाती तूफान कहलाती हैं।
9. भ–स्खलन एक प्राकृतिक अभिक्रिया है जिसमें पर्वतीय ढालों पर विशालकाय के भूखण्ड नीचे की ओर खिसकने लगते हैं। इसका कारण प्राकृतिक और मानव–जनित दोनों ही होते हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रकृति-जनित आपदाओं को प्राकृतिक आपदा कहते हैं। इन आपदाओं की उत्पत्ति का कारण प्रकृति में होने वाले परिवर्तन हैं। भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, सूखा (अकाल), चक्रवात, भू-स्खलन, सुनामी, बादल विस्फोट आदि कुछ इसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा हैं।
2. नदी के किनारों से ऊपर की ओर जल के बहने को बाढ़ कहते हैं।
3. ज्वालामुखी एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जो अचानक प्रकट होकर पृथ्वी पर प्रलय का दृश्य उपस्थित कर देती है। भूपर्पटी का वह छेद जिसके द्वारा मैग्मा पृथ्वी की सतह पर पहुँचता है, ज्वालामुखी कहलाता है। ज्वालामुखी से लावा, मैग्मा, राख, कंकड़, पत्थर और ज्वलनशील गैसें निकलती हैं। पृथ्वी में उत्पन्न गैस ज्वालामुखी के उद्‌गार का कारण बनती हैं। भाप का दबाव चट्टानों के खण्डों एवं गैस और राख को पर्याप्त ऊँचाई तक फेंक देता है।
4. स्वयं कीजिए।
5. स्वयं कीजिए।
6. जब किसी क्षेत्र में लम्बे समय तक वर्षा, जल या नमी की कमी हो जाये तो यह स्थिति सूखा या अकाल कहलाती है। यह मन्द गति वाली प्राकृतिक आपदा है। कई वर्षों से अफ्रीका, भारत, ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिण अमेरिका सूखे का सामना कर रहे हैं। परन्तु भारत में 2010 में अतिवृष्टि के कारण सूखे की स्थिति नहीं बन पाई। भारत के राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा आदि राज्यों को कभी-कभी सूखे की स्थिति से निपटना पड़ता है।
7. जब गरजने वाले तूफान बड़ी मात्रा में ओलों की उत्पत्ति करते हैं तो ओलावृष्टि होती है। ओलावृष्टि के कारण विशेष रूप से खेती के मैदान, उगी हुई फसल और खेती के उपकरण नष्ट हो जाते हैं। अब तक दर्ज किया गया सबसे बड़ा ओला ग्रेपफूट (अमेरिका फल) के आकार का था ।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भूकंप से बचने के उपाय निम्नलिखित हैं—
    1. भूकंप के समय हमें इमारतों, भवनों से बाहर आ जाना चाहिए तथा खुले मैदानों, खेतों, आँगनों या प्लाटों में भूमि के समानान्तर लेट जाना चाहिए।
    2. हमें पेड़ों के तनों, भारी सामान के नीचे या पास में तथा दीवारों के निकट खड़ें नहीं रहना चाहिए।

3. हमें बिजली के खम्भों, मीनारों, ऊँचे पेड़ों तथा इमारतों से दूर खुले में रहना चाहिए।
4. इमारतों का निर्माण भूकंपरोधी वास्तुकला के आधार पर करना चाहिए।
5. भूकंप से बचने के लिए लोगों को समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, रेडियों तथा टेलीविजन के माध्यम से जागरूक रहना चाहिए।
6. लिफ्ट का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

2. स्वयं कीजिए।

3. **तूफानी लहरें** – समुद्र के अन्दर भूकंपीय गति द्वारा उत्पन्न तीव्र जलीय तरंगों को सुनामी लहरें कहते हैं। यह लहरें समुद्र से विभिन्न क्षेत्रों तथा इसके मुख्य केन्द्र से प्रवाहित होती हैं। कभी-कभी इन विनाशकारी लहरों की गति 60 से 100 किमी प्रति घंटा तक नापी गई है। इस प्रकार की लहरों ने 26 दिसम्बर, 2004 को हिन्द महासागर से उठकर उसके आस-पास के क्षेत्रों में भयंकर विनाश किया था। इस विनाश में लाखों लोगों की मृत्यु हो गयी तथा अधिक संख्या में प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का विनाश हुआ।

आँधी – आँधी एक प्राकृतिक आपदा है जो गरज वाले तूफानों और अचानक घूमती हुई तेज दबाव वाली हवाओं के कारण आती है। तेज गति वाली आँधी को टोरनेडो कहते हैं। टोरनेडो की शक्ति की फुजीता पैमाने पर F-1 से मापा जाता है जो सबसे कम शक्तिशाली है। F-5 सर्वाधिक शक्तिशाली माना जाता है। अब तक का सर्वाधिक शक्तिशाली टोरनेडो, गति सीमा के आधार पर मॉसटर था। जिसने 1999 में मूर, ओकलाहोया को उड़ा दिया और हवा की गति 318 किमी/घंटा तक पहुँच गई।

सौर प्रचंडता – सौर प्रचंडता सूर्य के परिवेश में भयंकर विस्फोट है। सौर प्रचंडता सौर के पुटली या कोनों के वृत्तों में घटित होती है। वे विद्युत चुंबकीय विकिरण उत्पन्न करती हैं तो सतरंगी किरणों के रूप में होती है। सौर प्रचंडता परिक्रमा कर रहे ग्रहों, अंतरिक्ष अभियान पर गए लोगों, संचार प्रणालियों और विद्युत ग्रिड के लिए खतरनाक हैं।

पाठ-3 : कृषि

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ये सभी
2. ये सभी
3. बागानी फसल
4. मलेशिया

5. चाय की खेती 6. चीन

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. सुपर फूड 2. रेशेदार
3. भारत 4. अपने क्षेत्र की वनस्पति
5. चीन, भारत, मिस्र

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✗ 2. ✗
3. ✓ 4. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. पूर्वी–उत्तर अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड जैसे विकसित देशों मे इसे अपनाया जाता है। इसमें मध्यम आकार की जोतों पर सघन खेती की जाती है।
2. कपास रेशेदार फसलें हैं। विश्व में चीन में तथा भारत में गुजरात में सर्वाधिक कपास पैदा की जाती है।
3. जूट, पटसन और इसी प्रकार के पौधों के रेशे हैं। इसके रेशे बोरे, दरी, तम्बू, तिरपाल, टाट, रस्सियाँ, निम्न कोटि के कपडे तथा कागज बनाने के काम आता है।
4. इस प्रकार की कृषि अधिकतर कृषक परिवार वर्ग की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये की जाती है। अधिकतर फसलें जिस क्षेत्र में उगाई जाती है, वही उपभोग कर ली जाती है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. बीज, उपकरण, उर्वरक।
2. **निर्वाह कृषि** – इस प्रकार की कृषि अधिकतर कृषक परिवार वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की जाती है। अधिकतर फसलें जिस क्षेत्र में उगाई जाती है, वही उपभोग कर ली जाती है। इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत तीन प्रकार की पारम्परिक कृषि पद्धतियाँ आती हैं। ये हैं:–चलवासी पशुचारण, स्थानांतरी कृषि और गहन निर्वाह कृषि।

   व्यापारिक कृषि – इस प्रकार की कृषि में फसलों का उत्पादन तथा पशुपालन उत्पादों को बाजार में बेचने के लिए किया जाता है। इसमें विस्तृत कृषि क्षेत्र पर मशीनों द्वारा कृषि कार्य किए जाते हैं। व्यापारिक कृषि के अन्तर्गत मिश्रित कृषि, रोपण कृषि एवं व्यापारिक अनाज कृषि सम्मिलित हैं।
3. **स्थानान्तरी कृषि** – यह कृषि का प्राचीनतम रूप है। सभ्यता

के प्रारम्भिक काल में मानव ने सर्वप्रथम स्थानान्तरी कृषि का विकास किया था। इस कृषि पद्धति में वनों को काटकर तथा जलाकर, भूमि साफ करके फसलें उगायी जाती हैं। इसमें केवल स्थानीय उपयोग के लिए खाद्यान्न, तरकारियाँ, कपास, शकरकन्द, केला आदि उगाए जाते हैं। दो-तीन वर्षों में जब मिट्टी की उर्वरा शक्ति घटने लगती है, तब उस भूमि को छोड़कर, अन्यत्र भूमि साफ करके खेती की जाती है। कुछ वर्षों के बाद जब भूमि पुनः उर्वरता प्राप्त कर लेती है। तब कृषक उस पर पुनः खेती करने लगते हैं। इस प्रकार की कृषि में स्थानान्तरण की प्रक्रिया चलती रहती है, अतः इसे स्थानान्तरी कृषि कहा जाता है। विश्व के अनेक भागों में इस प्रकार की कृषि प्रचलित है।

4. **रोपण कृषि** - जब फसलों को एक बार बोकर उनसे कई सालों तक उत्पाद इकट्ठे किए जाते हैं तो इस प्रकार की खेती बागानी या रोपण कृषि कहलाती है। रबड़, चाय, कॉफी, नारियल, केला, गन्ना आदि इसी प्रकार की फसलें हैं। इस प्रकार की फसलों को उगाने में पूँजी तथा श्रम की बड़े पैमाने पर आवश्यकता होती है। इस प्रकार की खेती श्रीलंका, भारत, मलेशिया, घाना, क्यूबा, ब्राजील, जायरे आदि देशों में की जाती है। इन खेतों को विशेष बागान या फार्म कहते हैं। विदेशी लोग अपने उपनिवेशों में इस प्रकार की खेती कराते हैं क्योंकि उन्हें श्रमिक बड़ी मात्रा में उपलब्ध हो जाते हैं।

   इस खेती के लिए सुविकसित यातायात व्यवस्था, बाजार तथा वैज्ञानिक तरीके से भण्डारण अति आवश्यक है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।
3. एक औसत भारतीय फार्म की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-
   1. भारतीय औसत फार्म का आकार एक एकड़ से भी कम होता है। इसका मुख्य कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी आवृत्ति भूमि बँटवारा होना है।
   2. भूमि पर सघनतापूर्ण खेती करना। यद्यपि एक वर्ष में दो या अधिक फसलों को उगाना।
   3. उत्पादों को स्वयं के प्रयोग हेतु रोक लेना और बिक्री हेतु बहुत कम मात्रा बचना।
   4. यंत्रों का सीमित प्रयोग करना। अनेक कृषक बहुत गरीब होने के कारण कृषि यंत्रों का वहन नहीं उठा सकते। जैसे कि आबादी अधिक है व मजदूरी सस्ती है और उनका प्रयोग कृषि कार्यों में व्यापक रूप से होता है।

5. रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, उच्च किस्म के बीजों तथा आधुनिक कृषि प्रणालियों का सीमित प्रयोग होना। इसका कारण कुछ तो जागरूकता की कमी है तो कुछ गरीबी है।
6. फार्म आय को बढ़ाने के लिए पशुचारणीय खेती व मिश्रित खेती का विकास सीमित हो गया है। फार्म का प्रयोग मात्र खाद्यान्न फसल उगाने के लिए होने लगा है। साधारणत: अब जोतों में चारणीय फसल नहीं उगाई जाती और फार्म के पशुओं को फार्म के अपशिष्ट पदार्थों पर जीवन-यापन करना होता है।
7. फार्म का प्रबंध अनपढ़ कृषक करते हैं। उनके जागरूकता स्तर को बढ़ाने के लिए योजनाएँ प्रचलित की जा रही हैं।
8. फार्म उत्पाद जल्दी खराब होने वाले होते हैं और उनका भंडारण भी बहुत खर्चीला होता है अधिकांश कृषक उनका भंडारण वहन नहीं कर पाते हैं। उन्हें अपने उत्पाद अच्छे दाम न मिल पाने पर भी जल्द ही बेचने पड़ते हैं।

4. स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : उद्योग-धंधे

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ग्रेट ब्रिटेन में
2. टोकरी
3. यू०के०
4. चूना पत्थर
5. जापान
6. लौह-इस्पात उद्योग
7. वनों

ख. मिलान करो -

1. झारखण्ड
2. पश्चिम बंगाल
3. कर्नाटक
4. उड़ीसा
5. छत्तीसगढ़
6. बिहार
7. तमिलनाडु
8. कर्नाटक

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✗
3. ✓
4. ✗
5. ✗
6. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. उद्योगों की स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण कारक उसके द्वारा

उत्पादित माल के लिये उपलब्ध बाजार का होना है। बाजार से अभिप्राय उस क्षेत्र से होता है जहाँ तैयार माल की माँग हो और वहाँ के निवासियों में उन वस्तुओं को खरीदने की क्षमता भी हो।

2. चाय, चीनी, वस्त्र, कागज, पटसन (जूट), घी, तेल, चमडा तथा दुग्ध आदि उद्योगों के लिये कच्चा माल कृषि फसलों तथा पशुओं से प्राप्त होता है इसलिए इन्हें-कृषि-आधारित उद्योग कहते हैं।

3. विश्व में उद्योगों का वृहद क्षेत्र पर केंद्रीकरण कुछ ही भागों में हुआ है। इनमें उत्तरी अमेरिका का मध्य पूर्व भाग, पश्चिमी तथा मध्य यूरोप, रूस का यूरोपीय भाग यूक्रेन तथा दक्षिण एवं पूर्वी एशिया के कुछ क्षेत्रों जैसे दक्षिण पूर्वी, जापान, पूर्वी, चीन तथा भारत के कुछ भाग उल्लेखनीय हैं।

4. उद्योगों के विकास के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ होती हैं। आओ, अब हम उद्योगों की स्थापना को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक निगाह डालते हैं।

1.कच्चा माल	2. श्रम
3. जल	4. बाजार
5. पूँजी	6. यातायात

7. ऊर्जा के स्त्रोत

5. टिस्को की हिस्सेदारी जमशेदजी नसरवानजी ने डाली थी और 26 अगस्त 1907 को सरदोराबजी द्वारा स्थापित किया गया था। सुवर्ण रेखा नदी के तट पर बहुत सारा जंगल साफ करके एक औद्योगिक शहर बसने के लिये बनाया गया है। इस शहर का नाम जमशेदपुर रखा गया। इस जगह पर लौह अयस्क के भंडारों के पास ही पानी भी था। इसलिए यहाँ पर आयरन और स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना हुई और इसमें 1912 से स्टील का उत्पादन होने लगा।

6. लोहे तथा इस्पात का उपयोग तार, कृषि यंत्र, औजार, मोटर-कार, रेलगाडियाँ, रेलवे इंजन, पानी के जहाज (जलयान), विभिन्न प्रकार के इंजन मशीने, तेल की पटरियाँ, पुल बिजली के खंभे, विद्युत उपकरण, पिन, सुईयाँ, पाइप, इमारतें, चारपाई आदि बनाने में किया जाता है।

7. उद्योगों की अवस्थिति के मुख्य कारक- कच्चा माल, श्रम, जल, बाजार, पूँजी, परिवहन तथा शक्ति स्त्रोत हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. उद्योगों का वर्गीकरण आकार, कच्चे माल एवं स्वामित्व के आधार पर किया जा सकता है। आकार पर आधारित उद्योग

   किसी उद्योग का आकार उसमें निवेश की गई पूँजी, नियुक्त कर्मचारियों की संख्या तथा उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। आकार के आधार पर उद्योगों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है–कुटीर उद्योग, लघु उद्योग एवं दीर्घ उद्योग।

2. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को चार वर्गों में बाँटा जाता है– निजी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र व सहकारी क्षेत्र।

   क. निजी क्षेत्र के उद्योग – किसी व्यक्ति या कई व्यक्तियों द्वारा मिलकर चलाये जाने वाले उद्योग निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं, जैसे मवाना शुगर मिल्स मवाना, टाटा मोटर्स, मोदी कॉन्टीनेन्टल टायर आदि।

   ख. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग – केन्द्रीय या राज्य सरकारों द्वारा चलाये जाने वाले उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। जैसे भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, गैस आँथॉरिटी इंडिया लिमिटेड, बोकारो स्टील्स लिमिटेड आदि।

3. अहमदाबाद भारत का एकमात्र ऐसा नगर है जहाँ सूती वस्त्र की लगभग 67 मिल स्थापित किये गये हैं। जहाँ उत्तम और बारीक सूती वस्त्र तैयार किये जाते हैं इसलिए इसे **पूर्व का बोस्टन** कहते हैं। यह नगर गुजरात में साबरमती नदी पर स्थित है। गुजरात में भारत की सर्वाधिक कपास पैदा होती है तथा इसकी जलवायु नम है जो सूत की कताई और बुनाई के लिए उपयुक्त है। कुशल और अर्द्धकुशल कारीगर, रेलों तथा सड़कों का जाल, वायुपत्तन, मुम्बई के बन्दरगाह तक आसानी से पहुँचाना तथा पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में स्थित बाजार के अलावा निर्यात की सुविधाएँ आदि अहमदाबाद में सूती वस्त्र मिलों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कारक हैं, परन्तु गुजरात और महाराष्ट्र के अन्य नगरों में स्थित सूती वस्त्र मिलों के साथ कड़ी स्पर्धा के कारण अहमदाबाद का सूती वस्त्र उद्योग अनेक समस्याओं से जूझ रहा है जिसके परिणामस्वरूप बहुत सी मिलें बन्द हो चुकी हैं।

4. **क. निजी क्षेत्र के उद्योग** – किसी व्यक्ति या कई व्यक्तियों द्वारा मिलकर चलाये जाने वाले उद्योग निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं, जैसे मवाना शुगर मिल्स मवाना, टाटा मोटर्स, मोदी कॉन्टीनेन्टल टायर आदि।

   ख. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग – केन्द्रीय या राज्य सरकारों द्वारा चलाये जाने वाले उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। जैसे भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, गैस आँथॉरिटी इंडिया

लिमिटेड, बोकारो स्टील्स लिमिटेड आदि।

5. विश्व में सब ओर वृहद् प्रकार के उद्योगों का विकास हो गया है। जिनमें वस्त्र, खाद्य प्रक्रिया, पेय-पदार्थ, धातुकर्मीय, अभियांत्रिक, परिवहन उपकरण, रसायन, सीमेंट आदि उद्योग सम्मिलित हैं। हम अब दो प्रमुख उद्योगों-लोहा व इस्पात उद्योग तथा रेशा उद्योग के विषय में अध्ययन करेंगे।

6. 18वीं शताब्दी से पूर्व सूती वस्त्रों का निर्माण चरखे से या लूम से तैयार किये गये उद्योग से किया गया था। **इंग्लैण्ड** विश्व का प्रथम देश है जिसने सूती वस्त्र बुनने के लिए **पावरलूम** का आविष्कार किया। भारत विश्व में यू0एस0ए0, चीन और जापान के अलावा सूती वस्त्रों का निर्माण करने वाले देशों में से एक है।

भारत की प्रथम सूती वस्त्र निर्माण मिल कलकत्ता में 1818 ई0 में स्थापित की गई थी, परन्तु यह मिल पूरी तरह से असफल रही। इसके बाद 1854 ई0 में दूसरी सूती वस्त्र मिल मुम्बई में लगाई गई। अहमदाबाद में शाहपुर मिल 1816 ई0 में स्थापित की गई। ढाका की मलमल, मछलीपत्तनम की छींट, सूरत, वड़ोदरा और बुरहानपुर की गोल्ट रॉट कॉटन, कालीकट की केलिको-विश्वप्रसिद्ध सूती वस्त्र थे।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी जमशेदपुर** - इस कारखाने की स्थापना जमशेद जी टाटा द्वारा 1907 ई0 में बिहार राज्य के साकची गाँव में की गयी थी परन्तु वर्तमान में यह झारखण्ड राज्य में स्थित है। निजी क्षेत्र का यह देश का सबसे पहला कारखाना है तथा साथ ही भारत में इस्पात की सर्वाधिक उत्पादक इकाई भी है। यहाँ इसकी स्थापना का कारण झरिया की कोयला खानों का निकट होना है।

इन कारखानों को लौह-अयस्क कोल्हान और नोआमुंडी खानों (झारखण्ड) तथा मयूरभंज (उड़ीसा) से, कोयला जमदोबा, पश्चिमी बोकारो, लोदना, भोगरडिह धोवनशालाओं से, टिटेनियम दक्षिण भारत से तथा अग्नि मिट्टी बेल हिल्स से, लौह भट्टियों के लिए क्वार्टजाइट बालू कालामती से, चूना और डोलेमाइट उड़ीसा के गंगपुर क्षेत्र से, मैंगनीज बिहार और मध्य प्रदेश से, सस्ते श्रमिक पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश और उड़ीसा से, जलापूर्ति स्वर्ण रेखा तथा खरकाई नदियों से तथा टाटा नगर रेलवे स्टेशन इसे परिवहन की सुविधाएँ प्रदान करता है। अनेक प्रकार के उद्योग जैसे रेलवे इंजनों के पार्ट्स, कृषियंत्र, मशीनें, टिनसेकी प्लेटें, केबिल तथा तार इस प्लांट को बाजार उपलब्ध कराते हैं। यह कारखाना इस्पात की चादरें, गर्डर, रेल के डिब्बे, रेल की पटरी,

फिश प्लेट आदि भी बड़े पैमाने पर निर्माण करता है।

2. अहमदाबाद भारत का एकमात्र ऐसा नगर है जहाँ सूती वस्त्र की लगभग 67 मिल स्थापित किये गये हैं। जहाँ उत्तम और बारीक सूती वस्त्र तैयार किये जाते हैं इसलिए इसे **पूर्व का बोस्टन** कहते हैं। यह नगर गुजरात में साबरमती नदी पर स्थित है। गुजरात में भारत की सर्वाधिक कपास पैदा होती है तथा इसकी जलवायु नम है जो सूत की कताई और बुनाई के लिए उपयुक्त है। कुशल और अर्द्धकुशल कारीगर, रेलों तथा सड़कों का जाल, वायुपत्तन, मुम्बई के बन्दरगाह तक आसानी से पहुँचाना तथा पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में स्थित बाजार के अलावा निर्यात की सुविधाएँ आदि अहमदाबाद में सूती वस्त्र मिलों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कारक हैं, परन्तु गुजरात और महाराष्ट्र के अन्य नगरों में स्थित सूती वस्त्र मिलों के साथ कड़ी स्पर्धा के कारण अहमदाबाद का सूती वस्त्र उद्योग अनेक समस्याओं से जूझ रहा है जिसके परिणामस्वरूप बहुत सी मिलें बन्द हो चुकी हैं।

3. सिलिकॉन घाटी उत्तरी अमेरिका स्थित कैलिफोर्निया में रॉकी पर्वत के ठीक आगे स्थित है। यहाँ की जलवायु ठण्डी है और घाटी पूरे विश्व के कुछ सबसे अधिक विकसित वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक केन्द्रों के पास स्थित है। वातावरण सुखद और साफ है जिससें आई. टी. सेक्टर का काफी हद तक विस्तार हुआ है। यह बड़े सड़क मार्गों और वायुपत्तनों के पास स्थित है। अच्छी बाजार उपलब्धि के अतिरिक्त अनेक अनुक्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए कुशल कर्मचारी और तकनीशियन यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

जब सन् 1976 में पी०सी० क्रांति शुरू हुई तो प्रथम पर्सनल कंप्यूटर (निजी कंप्यूटर) A pple-I प्रचलित हुआ और फिर अगले ही वर्ष Apple II प्रचलन में आ गया। ह्यूलेट पेकार्ड ने 1980 में अपना प्रथम निजी कंम्प्यूटर प्रक्षेपित किया। सन् 1982 में इंटरनेशनल बिजीनेस मशीनस (IBM) ने एक डिस्क ऑपरेशन सिस्टम (DOS) जिसे माइक्रोसॉफ्ट ने विकसित किया था, के साथ एक निजी कंप्यूटर प्रचलित किया। इसी समय काल में सेमी कंडक्टर उद्योग का प्रदेश में आविर्भाव हुआ। इस उद्योग में सिलिकॉन का प्रयोग एक अर्धचालक के रूप में किया गया था। जिसमें से चयनित रूप से विद्युत वेग को नियंत्रित करके गुजारा गया था। एक सूक्ष्म आकार की सिलिकॉन चिप अपने आप में विद्युत बटन के ON-OFF कार्य का एक बड़ी संख्या में संचय कर सकती थी। सिलिकॉन चिप का समूह में निर्माण तो एक अर्धचालक उद्योग में होना शुरू हुआ और यह वही उद्योग था जिसने बाद में 'सिलिकॉन वैली' के नाम को जन्म दिया। इसमें एक अथाह पूँजी आधार,

तकनीकी कुशल कर्मचारी, ऊर्जा सुविधाएँ, सरकारी सहयोग तथा मनोहारी जलवायु, इन सभी ने सिलिकॉन वैली में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के विकास व बढ़त में सहायता की। इस प्रदेश ने न सिर्फ केलिफोर्निया अपितु यू०एस०ए० की अर्थव्यवस्था को विस्मयकारी अंशदान दिया।

पाठ-5 : मानव संसाधन

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 1 अरब
2. एशिया में
3. 75
4. भारत की
5. जापान

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. 45
2. 324
3. 90, 33
4. 8
5. 939

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. प्रायः विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक हैं। इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि पर अधिक होने के कारण जन्म-दर और मृत्यु-दर के बीच अधिक अन्तर हैं। इन देशों में जन्म-दर मृत्यु-दर की तुलना में अधिक हैं।
2. जब मानव अपनी बुद्धि और कौशल से इन्हें अधिक उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित कर सके। स्वस्थ, शिक्षित और अभिप्रेरित लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुरुप संसाधनों का विकास करते हैं।
3. लोग विषम जलवायु की अपेक्षा सम जलवायु प्रदेश में रहना पसंद करते हैं।

   लोग मैदानी भागों में रहना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि मैदानी भाग, खेती, विनिर्माण और सेवा क्रियाओं के लिये उपयुक्त होते हैं।

   उपजाऊ मृदाएँ कृषि के लिए उपयुक्त भूमि प्रदान करती है।

4. प्रति एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात कहते हैं। विश्व स्तर पर प्रति 1000 पुरुषों के लिये 993 स्त्रियों की संख्या मिलती है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. किसी उपयोगी क्रिया-कलाप में लगे हुए सभी मनुष्य मानव संसाधन कहलाते हैं। देश और व्यक्ति दोनों के ही विकास के लिए मानव संसाधनों का बहुत अधिक महत्त्व है। प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग तभी सम्भव है जब मानव अपनी बुद्धि और कौशल से इन्हें अधिक उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित कर सकें। स्वस्थ, शिक्षित और अभिप्रेरित लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप संसाधनों का विकास करते हैं।

2. विश्व में जनसंख्या का औसत जन-घनत्व 45 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। महाद्वीप के आधार पर क्रमानुसार एशिया 116, यूरोप 32, अफ्रीका 26, दक्षिणी अमेरिका 25, उत्तरी अमेरिका 14 और ओशोनिया 4 में जन-घनत्व की विभिन्नता पाई जाती है। भारत में औसत जन-घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

3. मानव संसाधन विकास के लिए पुरुषों एवं महिलाओं का साक्षर होना आवश्यक है। साक्षर व्यक्ति ही किसी भी व्यवसाय को अच्छे ढंग से चला सकते हैं और उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं। भारत जैसे देश में मानव संसाधनों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

   किसी देश की जनसंख्या कितनी भी अधिक हो, उसका उस देश के आर्थिक विकास के स्तर में कुछ अंतर नहीं पड़ता। आर्थिक विकास मानव संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर होता है। उदाहरण के लिए-बांग्लादेश और जापान अति घने बसे देश हैं लेकिन जापान, बांग्लादेश से आर्थिक रूप से अधिक विकसित देश हैं, क्योंकि जापान के लोग बांग्लादेश के लोगों की तुलना में अधिक कुशल, प्रशिक्षित, स्वस्थ्य एवं परिश्रमी हैं।

4. स्वयं कीजिए।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. जनसंख्या की वृद्धि का कारण जन्म-दर और मृत्यु-दर में परिवर्तन होना है। मानव इतिहास की लम्बी अवधि में 1800 ई. तक विश्व की जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ी है क्योंकि बड़ी संख्या में बच्चे जन्म लेते थे परन्तु शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो जाती थी। ऐसा इसलिए होता था कि उस समय उचित स्वास्थ्य सेवाएँ तथा लोगों के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं था। 1820 ई०

में विश्व की जनसंख्या 1 अरब थी। 150 वर्ष बाद 1970 के प्रारम्भ में विश्व की जनसंख्या 3 अरब हो गई। 2011 में अर्थात् 41 वर्षों की अवधि में जनसंख्या दुगुनी 7 अरब हो गई। इस स्थिति को जनसंख्या विस्फोट कहा जाता है। इसका मुख्य कारण मृत्यु-दर में कमी होना है जबकि कुछ क्षेत्रों में जन्म-दर अभी भी काफी अधिक थी। जनसंख्या की वृद्धि दर को जन्म-दर और मृत्यु-दर के अन्तर से नापा जाता है। विश्व में जनसंख्या के बढ़ने का मुख्य कारण प्राकृतिक वृद्धि दर का तीव्रता से बढ़ना हैं।

प्रवास एक अन्य कारण है जिससे जनसंख्या के आकार में परिवर्तन आता है। लोग एक देश में अथवा देशों के बीच एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं और वहाँ स्थाई रूप से अपना निवास बना लेते हैं। उत्प्रवासी वे लोग होते हैं जो अपने देश या क्षेत्र को छोड़कर अन्य देशों या क्षेत्रों में जाते हैं। आप्रवासी वे लोग हैं जो किसी दूसरे देश या क्षेत्र में अपने देश या अपने क्षेत्र से आते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में आप्रवास द्वारा संख्या बढ़ी हैं। सूडान एक ऐसा देश है जिसमें लोगों के बाहर चले जाने से जनसंख्या में कमी का अनुभव किया गया हैं।

2. अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की सामान्य प्रकृति यह है कि लोग आर्थिक दृष्टि से कम विकसित क्षेत्रों से आर्थिक अवसरों की खोज में आर्थिक दृष्टि से विकसित क्षेत्रों में चले जाते हैं। भारत जैसे देश में लोग ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में चले जाते हैं क्योंकि नगरों में रोजगार के अवसर अधिक होते हैं तथा शिक्षा और स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएँ होती हैं।

जनसंख्या वृद्धि की दर अलग-अलग देशों में अलग-अलग है। प्राय: विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक हैं। इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि दर अधिक होने के कारण जन्म-दर और मृत्यु-दर के बीच अधिक अन्तर है। इन देशों में जन्म-दर मृत्यु-दर की तुलना में अधिक है। ऐसे देश अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में हैं। इसके विपरीत, विकसित देशों जैसे-यूरोप के देशों, उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया में वृद्धि दर कम है क्योंकि इन देशों में जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों कम हैं। मानव संसाधन विकास के लिए यह एक आदर्श स्थिति है। जनसंख्या की वृद्धि दर को कम करने का एक मात्र उपाय जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों को कम करना हैं।

पाठ-6 : भूमि, मृदा और जल

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 30%
2. ये सभी
3. असम में
4. इनमें से कोई नहीं
5. ये सभी
6. भौतिक कारक
7. पतदार लगाकर

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. 3287263
2. भारत
3. ज्वालामुखी
4. जलवायु मृदा
5. जलोढ़ (दोमट)

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✗
4. ✗
5. ✓
6. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. पृथ्वी के 30 प्रतिशत क्षेत्र में 90 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।
2. भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 33 करोड़ हेक्टेयर है लेकिन इसमें से केवल 30.5 करोड हेक्टेयर क्षेत्रफल पर भूमि उपयोग के आँकडें उपलब्ध हैं।
3. भूस्खलन को साधारण शब्दों में चट्टानों के विस्तृत हटने व खिसकने, मलबे या पृथ्वी के ढलान पर लुढकने के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। ये प्रायः भूकंपों, बाढ एवं ज्वालामुखी के साथ होते हैं। एक लंबे अन्तराल तक निरंतर भारी वर्षा भी भारी भूस्खलन का कारण बन जाती है जिसमें कुछ समय के लिये नदियों के बहाव तक रोडे-पत्थरों के कारण रुक जाते हैं।
4. मृदा निर्माण के छह प्रमुख कारक मृदा संरचना का निर्माण करते हैं। ये स्थान पर अंतर रखते है ये है:-
   1. जनक चट्टान की प्रकृति
   2. ह्यूमस
   3. स्थलाकृति
   4. अपरदन के कारक

5. पृथ्वी की सबसे ऊपरी उपजाऊ परत को मिट्टी (मृदा) कहते हैं।

6. भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। ये मिट्टियाँ निम्न प्रकार हैं-

   1. पर्वतीय मिट्टी
   2. लेटराइट मिट्टी
   3. जलोढ मिट्टी
   4. काली मिट्टी
   5. लाल मिट्टी
   6. रेतीली मिट्टी या मरुस्थलीय मिट्टी

7. मृदा अपरदन से तात्पर्य बहते जल एवं पवनों द्वारा ऊपरी मृदा का घटना है। इसके कारण मृदा की उर्वरता की बहुत क्षति होती है क्योंकि ऊपरी मृदा मे ही सभी खनिज लवण व पोषक तत्व मौजूद होते हैं।

8. जल संरक्षण का अर्थ है जल के प्रयोग को घटाना एवं सफाई, निर्माण एवं कृषि आदि के लिए अवशिष्ट जल का पुनः चक्रण (रिसाइक्लिंग) करना। धीमी गति के शावर हेड्स (कम पानी गरम होने के कारण कम ऊर्जा का प्रयोग होता है और इसलिए इसे कभी-कभी ऊर्जा कुशल शावर भी कहा जाता है।) धीमा फ्लश शौचालय एवं खाद शौचालय।

9. किसी क्षेत्र के भौतिक कारक(जैसेः- स्थलाकृति मृदा जलवायु प्राकृतिक वनस्पति, जल की उपलब्धता एवं खनिज संसाधन आदि भी किसी प्रदेश की भूमि के उपयोग में प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. भूमि वह सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रमुख संसाधन है जो मानव सहित सभी जीवों और निर्जीवों की अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। इसका उपयोग इमारतों, सड़कों के निर्माण के लिए तथा रेलवेलाइनों को बिछाने के अतिरिक्त खेती करने, उद्योग स्थापित करने, खान आदि खोदने के लिए किया जाता है। .

   जैसा कि हम पढ़ चुके हैं; भूमि का उपयोग वानिकी, इमारतों, सड़कों के निर्माण के लिए, रेलों का जाल बिछाने, उद्योग स्थापित करने आदि के लिए किया जाता है। इसी प्रक्रिया को भूमि-उपयोग कहते हैं।

2. भूमि का उपयोग कृषि करने, मानव अधिवासों, खनिज निकालने, चरागाहों, उद्योग लगाने, वन लगाने आदि में किया जाता है।

3. बढ़ती हुई जनसंख्या और उसकी जरूरतें जंगलों के कटने तथा

उपजाऊ भूमि के नष्ट होने के मुख्य कारण हैं। इन्हीं गतिविधियों ने भूमि-संसाधनों को नष्ट कर दिया है। भूमि-संसाधनों को संरक्षित करने के लिए हमें निम्नलिखित उपायों को अमल में लाना चाहिए –

1. भवन-निर्माण और कृषि भूमि प्राप्त करने के लिए हमें वनों के कटाव पर रोक लगानी चाहिए।
2. कृषि फसलों में जहरीले रसायनों, कीटनाशकों और उर्वरकों का अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए।
3. असीमित पशुचारण पर रोक लगानी चाहिए।
4. खेती के महत्त्वपूर्ण और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना चाहिए।
5. फसलों की सिंचाई के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
6. पेड़-पौधे रोपण के द्वारा मिट्टी का संरक्षण करना चाहिए।
7. मरुस्थलों का विस्तारिकरण रोका जाना चाहिए।

4. **मृदा की परतें** :- मृदा की निम्नलिखित चार परते हैं:-

ऊपरी मृदा :- चट्टानों का सबसे उत्कृष्ट रूप; जैसे:-मृत्तिका, गाद एवं मृदा की ऊपरी परत का बालू रूप ऊपरी मृदा कहलाता है। इस परत में ही ह्यूमस पाया जाता है। पौधों की जड़े इसी परत में ही सीमित रहती हैं।

उपमृदा :- ऊपरी मृदा के नीचे की परत उपमृदा होती हैं। मृदा की इस परत में वर्षा जल एकत्रित होता है। इसका निर्माण मौसमी चट्टानों, गाद, मृत्तिका एवं कुछ पोषकों, जैसे:- घुलनशील, खनिज लवणों एवं लौह तत्त्वों के मेल से होता है।

अपक्षयित परत :- यह परत उपमृदा एवं जनक शैल के बीच में स्थित होती है। यह मौसमी शैलों से बनती हैं।

जनक चट्टान :- मृदा पार्श्वन की सबसे निचली व अंतिम परत जनक चट्टान होती है यह अपक्षयरहित चट्टान की ठोस परत होती है।

5. भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। ये मिट्टियाँ निम्न प्रकार हैं—

पर्वतीय मिट्टी – इस प्रकार की मिट्टी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। हिमालय में इस मिट्टी में अधिक विस्तार पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखण्ड, असम आदि पहाड़ी राज्यों में यह बड़ी मात्रा में पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा लाई गयी सिल्ट तथा जंगलों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थों के जमाव से होता है।

लेटराइट मिट्टी – इस मिट्टी का निर्माण चट्टानों के टूटने से होता है। इस मिट्टी में लोहे तथा पोटाश की मात्रा अत्यधिक होती है जिससे यह कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी गहरे लाल तथा सफेद रंग की होती है। इसमें केवल घास और झाड़ियाँ ही उग पाती हैं। इसका विस्तार मध्य प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी घाटों, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा के तटीय भागों, मेघालय, असम और राजमहल की पहाड़ियों में है।

6. भूस्खलन को साधारण शब्दों में चट्टानों के विस्तृत हटने व खिसकने, मलबे या पृथ्वी के ढलान पर लुढ़कने के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। ये प्रायः भूंकपों, बाढ़ एवं ज्वालामुखी के साथ होते हैं। एक लंबे अंतराल तक निरंतर भारी वर्षा भी भारी भूस्खलन का कारण बन जाती है जिसमें कुछ समय के लिए नदियों के बहाव तक रोड़े-पत्थरों के कारण रुक जाते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन एक विस्तृत प्राकृतिक आपदा के रूप में उभर कर आता है। ये भारी मात्रा में प्रायः जान व माल की हानि करता है तथा विस्तृत स्थिति पर कब्जा कर लेता है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **मानवीय एवं आर्थिक कारक** – किसी देश के भूमि उपयोग के प्रारूप को मानवीय एवं आर्थिक कारक भी महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। उदाहरणतः सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में इमारतों, मकानों, सड़कों, रेलमार्गों आदि जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृषि भूमि, वन भूमि अथवा वनस्पतियों का अतिक्रमण किया जाता है। कभी-कभी आधारभूत संरचनाओं का विकास भी प्रदेश के भूमि उपयोग को एक नया आयाम देता है। अमेरिका के प्रेअरी एवं कनाड़ा के घासीय क्षेत्रों में गेहूँ एवं मक्का की सर्वाधिक खेती को वहाँ के सड़कीय एवं रेलमार्गों ने बहुत अधिक सुविधाजनक बना दिया है। विश्व में भूमि प्रयोग का प्रारूप निम्न तालिका में प्रदर्शित हैं:-

देश	फसल भूमि%	चरागाह%	वन%	अन्य उपयोग%
भारत	57	4	22	17
युनाइटेड किंगडम	29	46	10	15
यू०एस०ए०	21	26	32	21
ऑस्ट्रेलिया	6	56	32	21
ब्राजील	9	20	66	5
चीन	10	34	14	42

2. जल एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है और हमारे लिए बहुपयोगी है:-

1. जल का उपभोग विविध घरेलू कार्यों; जैसे:-पीने, खाना पकाने, नहाने, कपड़े धोने आदि में किया जाता है।
2. नदियों एवं झीलों के जल का उपयोग सिंचाई हेतु किया जाता है। अत: यह कृषि प्रक्रिया में बहुत सहायक है।
3. जल पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं की मूलभूत आवश्यकता है।
4. हमें अपने उद्योगों में भी जल की आवश्यकता होती है; जैसे:-मशीनों की सफाई व उनको ठंडा रखने के लिए जल उपयोगी है।
5. जल का उपयोग जल-विद्युत बनाने में होता है।
6. तटीय क्षेत्रों में विशाल जल निकाय वातावरण को संतुलित बनाए रखने में सहायक होते हैं।
7. महासागरीय जल विस्तृत प्रजाति के समुद्री जीवों का घर होता है।
8. जल निकायों का यातायात के साधन के रूप में भी उपयोग होता है।

3. **भारत में मिट्टी का वर्गीकरण** - भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। ये मिट्टियाँ निम्न प्रकार हैं—

पर्वतीय मिट्टी - इस प्रकार की मिट्टी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। हिमालय में इस मिट्टी में अधिक विस्तार पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखण्ड, असम आदि पहाड़ी राज्यों में यह बड़ी मात्रा में पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा लाई गयी सिल्ट तथा जंगलों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थों के जमाव से होता है।

लेटराइट मिट्टी - इस मिट्टी का निर्माण चट्टानों के टूटने से होता है। इस मिट्टी में लोहे तथा पोटाश की मात्रा अत्यधिक होती है जिससे यह कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी गहरे लाल तथा सफेद रंग की होती है। इसमें केवल घास और झाड़ियाँ ही उग पाती हैं। इसका विस्तार मध्य प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी घाटों, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा के तटीय भागों, मेघालय, असम और राजमहल की पहाड़ियों में है।

जलोढ़ मिट्टी - यह मिट्टी हिमालय की नदियों द्वारा मैदान में लायी जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी है। कुल मिट्टी का एक चौथाई भाग जलोढ़ मिट्टी का बना है। गंगा का विशाल मैदान उत्तर भारत की नदियों द्वारा लाई गयी मिट्टी से बना हुआ है। इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम

बंगाल, उत्तराखण्ड तथा असम के कुछ हिस्सों में है। यह मिट्टी पोटाश, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, चूना तथा ह्यूमस युक्त होती है। खेती के लिए यह सबसे अच्छी मिट्टी मानी जाती है।

काली मिट्टी – काली मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी से निकले लावा से होता है। इस मिट्टी में चूना, पोटाश, मैग्नीशियम, एल्युमिना तथा लोहे की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है परन्तु इसमें फॉस्फोरस, नाइट्रोजन तथा जैविक तत्त्वों की कमी होती है। इसका विस्तार गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में है। अन्य मिट्टियों की तुलना में यह मिट्टी पानी को काफी समय तक रोके रखने की क्षमता युक्त होती है।

लाल मिट्टी – इस मिट्टी में लोहे तथा एल्युमिना की अधिक मात्रा पाई जाती है इसलिए इसका रंग लाल होता है। इस मिट्टी का निर्माण रूपान्तरित और क्रिस्टलीय शैलों के टूटने से हुआ है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश से तमिलनाडु तक है। कुछ भाग पश्चिमी महाराष्ट्र के कोंकण तट पर भी विस्तृत है। वर्षा के समय इस मिट्टी में पाया जाने वाला ह्यूमस नष्ट हो जाता है। पहाड़ियों के कुछ हिस्सें भी इस मिट्टी के बने हैं।

रेतीली मिट्टी या मरुस्थलीय मिट्टी – यह मिट्टी अत्यधिक कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। मिट्टी के कणों का आकार बड़ा होता है तथा रेत की मात्रा अधिक होती है, इसलिए इसे रेतीली मिट्टी कहते हैं। इस मिट्टी का विस्तार राजस्थान के थार रेगिस्तान, गुजरात, लद्दाख, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में है। मिट्टी में काँटेदार झाड़ियाँ बबूल, नागफनी आदि वनस्पतियाँ पाई जाती हैं परन्तु सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर इन मिट्टियों में अच्छी फसलें पैदा की जाती हैं।

4. **जल के स्रोत** – जल तीन अवस्थाओं में पाया जाता है—गैस, ठोस तथा द्रव। झीलों, तालाबों, कृत्रिम जलाशयों, पोखरों, नदियों, कुओं और भूमि के नीचे जल द्रव अवस्था में पाया जाता है। हिमखण्ड, बर्फ, ठोस कार्बन डाइऑक्साइड आदि जल के ठोस रूप हैं। जल वायुमण्डल में वाष्प के रूप में विद्यमान रहता है। बादलों से जल वर्षा के रूप में बरसता है। बादल और भाप भी जल के गैसीय रूप हैं। भूमिगत जल ट्यूब- वैलों (नलकूप), कुओं, आर्टिजन कुओं तथा गीजर के रूप में पृथ्वी से बाहर आता रहता है। नलकूप और कुओं से हम फसलों की सिंचाई तथा पीने के लिए जल प्राप्त करते हैं। नगरों में नहरों, नदियों और नलकूपों से पेयजल की पूर्ति की जाती है।

जल स्रोतों का संरक्षण – आज विश्व ताजे जल की पूर्ति की

समस्या से जूझ रहा है। जिसके मुख्य कारण जल-प्रदूषण तथा जल का दुरुपयोग है। नगर में रहने वाले हर आदमी को पीने, खाना पकाने, कपड़े धोने, घर साफ करने, नहाने, शौचादि से निवृत्त होने के लिए प्रतिदिन लगभग 100 लीटर पानी चाहिए। जल-प्रदूषण के कारणों में कल-कारखानों एवं घरों से निकलने वाले कूड़े-कचरे को नदियों, नालों, जलाशयों आदि में फेंकना, नगरीय सीवरों के जल को नदियों में बहाना, पैट्री-रसायनों, कीटनाशकों, रासायनिक उर्वरकों आदि का फसलों में प्रयोग आदि प्रमुख हैं।

जल-प्रदूषण को रोकने के लिए प्रदूषित जल का शोधन होना चाहिए। पेयजल की पूर्ति करने से पूर्व उसका क्लोरीनीकरण करना चाहिए। जल को उबालकर पीना चाहिए। फसलों में कीटनाशकों, जहरीले रसायनों आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जल को प्रदूषित होने से बचाने तथा बेकार बहने से रोकने के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली को घरों में अपनाना चाहिए। फसलों की सिंचाई करने के लिए छिड़काव विधि (स्प्रिंकल सिस्टम) का प्रयोग करना चाहिए ताकि जल वाष्पोत्सर्जन द्वारा एवं मेड़ों से बाहर जाकर नष्ट न होने पाये। नहरों को पक्का बनाना चाहिए ताकि पानी की हानि नहर के किनारों से रिसकर न हो सके।

इसके अतिरिक्त हमें आवश्यकतानुसार विभिन्न कार्यों के लिए जल का उपयोग सीमित मात्रा में करना चाहिए। सदैव जल को बचाने का प्रयास करना चाहिए। कम जल चाहने वाली फसलों को बोना चाहिए। नगरों के सीवर को जल-स्रोतों (नहर, नदी, नाले) आदि में न डालकर उसे इकट्ठा करके खाद में बदल देना चाहिए।

पाठ–1 : व्यापार से राज्यक्षेत्र तक

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. सूरत
2. इनमें से कोई नहीं
3. प्रदेश
4. प्लासी
5. सिराजुद्दौला

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. रानी चेन्नम्मा
2. मैसूर, मैसूर
3. मैसूर का शेर
4. गोदनिषेध
5. प्लासी

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✓
5. ✗

घ. मिलान करो –

1. प्लासी
2. झाँसी
3. कर्नाटक
4. इलाहाबार
5. बरार

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. 1798–1805 मे गर्वनर जनरल रिचार्ड वालेस्वली ने ब्रिटिश क्षेत्रधिकार को विस्तृत करने हेतु सहायक संधि प्रारम्भ की।
2. जब ब्रिटिशों ने छोटे राज्य किटटूर (अब कर्नाटक में) को अधिकार में लेना चाहा तो रानी चेन्नमा ने हथियार सँभाले और ब्रिटिश विरोधी अभिमान शुरु किया परंतु 1824 ई० में उसे बंदी बना लिया गया और 1829 ई० में बंदीग्रह में उसकी मृत्यु हुई।
3. अट्ठारहवीं सदा में बंगाल जो भारत में सबसे धनी और सबसे उपजाऊ प्रदेश था। ''पृथ्वी पर स्वर्ग'' के रूप में जाना जाता था। इस प्रदेश ने हालैंड, फ्रांस और इंग्लैण्ड के व्यापारियों को आकृर्षित किया।
4. स्कॉलर वजाहत मसूद लिखते हैं कि अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ब्रितानी व्यापारी चाँदी के सिक्के देकर भारतीयों से कपास और चावल खरीदते थे। प्लासी के लडाई के बाद ईस्ट

इंडिया कंपनी ने वित और राजस्व की प्रणाली की सहायता से भारत के साथ व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।

5. न्याय के संदर्भ में, एक नया तंत्र स्थापित किया गया। प्रत्येक जिले में दो अदालतें एक आपराधिक अदालत (फौजदारी अदालत) और एक और एक नागरिक अदालत (दीवानी अदालत) इनके देख-रेख मौलवी और हिंदू पंडित करते थे। जिलाधिशों के अधिकक्षण में कांजी और मुफ्ती फौजदारी अदालतों को नियंत्रित करते थे। भारतीय जिले में जिलाधीश प्रथम शख्स होता था। उसका मुख्य कर एकत्रण व राजस्व प्रकत्रण होता था।

च. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. **प्लासी का युद्ध (1757)** - इस युद्ध में सिराजुद्दौला पराजित हुआ और मारा गया। उसकी पराजय का सबसे प्रमुख कारण नवाब के सेनापति मीर जाफर का सहयोग प्राप्त नहीं था। मीर जाफर ने ब्रिटिशों से समझौता कर लिया। ब्रिटिशों ने उसे सिराज की मृत्योपरांत एक बड़ी रकम के बदले में बंगाल का नवाब बनाने का वायदा किया। कंपनी एक कठपुतली शासक ने उन्हें इच्छानुसार व्यापार छूट व लाभों के साथ काम करने देता, ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल के अधिकार क्षेत्रों में मुक्त व्यापार अधिकार प्राप्त हुए।

   ब्रिटिशों को 24 परगना क्षेत्र प्राप्त हुए और वे बंगाल के वास्तविक शासक बन गए। अब वे एक बड़ी सेना सुसज्जित व संचालित कर सकते थे। ब्रिटिशों ने बहुत ही तीव्र गति से व्यापार किया और बंगाल की धन-दौलत को पूर्णत: खाली कर दिया। इस युद्ध ने भारतीयों की अनकही आर्थिक दुर्दशा और शोषण की शुरूआत पर चिह्न लगा दिया था। प्लासी के युद्ध के परिणामस्वरुप, ब्रिटिशों ने बंगाल पर राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त कर लिया था।

2. वाणिज्यवाद - इससे तात्पर्य यह है कि व्यापारिक उद्यम प्राथमिक रूप में व्यापार द्वारा, सस्ती कीमतों पर माल खरीदकर उन्हें ऊँची कीमतों में बेचकर लाभ कमाते हैं।

   उन दिनों में व्यापारिक कंपनियों ने प्राथमिक रूप से प्रतियोगिता को कम करके ऊँचे लाभ कमाए। यह प्रतिस्पर्धा देश के अंदर या बाहर की कंपनियों के साथ हो सकती थी। वाणिज्यवाद की तलाश में पुर्तगाली ही वो पहले थे जो भारत पहुँचे थे। वे वास्कोडिगामा के पद-चिन्हों पर चलकर ही भारत आए थे।

3. एक प्रभावपूर्ण प्रशासन हेतु कंपनी साम्राज्य को महाप्रांतों में

विभाजित किया गया जो बंगाल, मद्रास और बंबई थे। प्रत्येक पर गवर्नर शासन करता था। गवर्नर जनरल सर्वोच्च प्रधान होता था जो वारेन हेस्टिंग्स था। वह प्रथम गवर्नर जनरल था जिसने अनेक प्रशासनिक सुधार किए।

न्याय के संदर्भ में, एक नया न्याय तंत्र स्थापित किया गया। प्रत्येक जिले में दो अदालतें एक आपराधिक अदालत (फौजदारी अदालत) और एक नागरिक अदालत (दीवानी अदालत)। इनकी देख रेख मौलवी और हिंदू पंडित करते थे।

जिलाधीशों के अधिक्षण में काजी और मुफ्ती फौजदारी अदालतों को नियंत्रित करते थे। भारतीय जिले में जिलाधीश प्रथम शख्स होता था। उसका मुख्य कार्य कर एकत्रण व राजस्व प्रकत्रण होता था और अपने जिले में जजों, पुलिस अधिकारियों व दरोगाओं की सहायता से न्याय व आदेश व्यवस्था बनाए रखना होता है। उसके कार्यालय समाहरणालय शक्ति और संरक्षण के नए केन्द्र बन गए थे। जिन्होंने धीरे-धीरे सत्ता के पिछले अधिकारियों को प्रतिस्थापित कर दिया।

छ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. सहायक सन्धि देशी राज्यों तथा कम्पनी के मध्य होती थी। इसके अनुसार कम्पनी देशी राज्यों को आन्तरिक व बाहरी खतरे के समय सैनिक सहायता देने का वचन देती थी, जिसके बदले में देशी राज्य को अनेक शर्तें माननी पड़ती थीं। इन सभी शर्तों का वर्णन इस प्रकार है-

   1. उसे अंग्रेजों को सर्वोच्च शक्ति मानना पड़ता था।

   2. वह अंग्रेजो के अतिरिक्त किसी भी यूरोपियन को नौकर नहीं रख सकता था। इस शर्त का उद्देश्य भारत में फ्रांसीसियों के प्रभाव को कम करना था। आपसी झगड़ों की दशा में उसे अंग्रेजों की मध्यस्थता स्वीकार करनी पड़ती थी और उनके निर्णयों को मानना पड़ता था।

   3. उसे अपने राज्य में एक अंग्रेजी रेजीडेण्ट (प्रतिनिधि) रखना पड़ता था, जिसके परामर्श से ही उसे अपना सारा शासन कार्य चलाना पड़ता था। उसे अंग्रेजो का अधिपत्या स्वीकार करना पड़ता था और यह उनकी अनुमति के बिना किसी अन्य शासक से संधि तथा युद्ध नहीं कर सकता था।

   4. उसे अपने राज्य में एक अंग्रेजी सेना रखनी पड़ती थी और उसका खर्च भी उसे ही देना पड़ता था। यदि वह खर्च नहीं दे पाता था तो उसे अपने राज्य का कुछ भाग अंग्रेजो को देना पड़ता था।

2. भारत में उपनिवेशीय शासन से कुछ प्रशासनिक सुधार तो हुआ परंतु शक्ति इसके सैन्य बल तक स्थिर हो गई। मुगल काल में सेना मुख्यत: अश्वारोही–सवारों, प्रशिक्षित सैनिक घुड़सवारों, पैदल सिपाहियों से संघटित होती थी।

वे धनुर्विद्या और तलवार प्रयोग में प्रशिक्षित थे। अट्ठारहवीं सदी में उनके उत्तरवर्ती राज्यों अवध और बनारस ने अपनी सेना में किसानों को भर्ती करना व प्रशिक्षित करना आरम्भ कर दिया। जब कंपनी अपनी सेना बढ़ा रही थी तो उसने भी यह सिपॉय (सिपाही) सैनिक अपनाए। कर्नाटक युद्ध में इन सिपाहियों को भी जगह दी गई जिनमें अधिकांश सैनिक भारतीय थे।

1820 ई० में कल्याणकारी तकनीक बदल दी गई और पैदल सैन्य दल अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था। अब सेना मस्टक (भारी बंदूकों) और तोड़ेदार बंदूकों (एक प्रकार की बंदूक जिसमें माचिस द्वारा मसाले को सुलगाया जाता था) का प्रयोग करने लगी थी। उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में एक परिच्छद सैन्य समाज विकसित हुआ। सैनिकों को आधुनिकतम हथियारों व शस्त्रों, वर्दी और अनुशासन का प्रशिक्षण यूरोपीय तरीके से दिया जाने लगा।

पाठ–2 : गाँवों पर शासन

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. उच्च
2. दीवान
3. 1773 ई०
4. थॉमस मुनरो

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. नील
2. छेदनयंत्र
3. लठियालों
4. बंगाल समाज

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✓

घ. मिलान कीजिए –

1. लॉर्ड कार्नवालिस
2. हॉल्ट मेकेंजी
3. ब्रिटिश संसद
4. नील
5. वोड

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. कुछ वर्षोपरांत भी, भूमि से आय को बढाने की इच्छा के

कारण नई व्यवस्थाएँ लागू की गई। अधिकारियों ने राजस्व दर बहुत ऊँची तय की और किसान उसे चुकाने में असमर्थ थे। रैयत गाँव-देहात से भाग गए और बहुत-से-गाँव वीरान हो गए। किसानों में ऋणग्रस्तता और भूमिहीनता और अधिक बढ़ गई थी।

2. व्यवस्थापन की शर्तों के अनुसार राजा और तालुकदार जमींदारों की भाँति प्राधिकृत थे। उन्हें किसानों से किराया वसूल करके कंपनी को राजस्व चुकाना होना था। ब्रिटिश अधिकारियों एलेक्जेंडर रीड और थामस मुनरों ने रैयतवाडी व्यवस्था प्रणाली लागू की। यह एक प्रणाली थी जिसमें किसानों, रैयत से सीधे राजस्व वसूल किया जाता था।

3. मलिकों को लंबी अवधि पर पट्टे पर अपनी जमीन देने पर जमींदार भी नाराज होते थे। 1859 में, रैयतों ने, जमींदारों और गाँव प्रमुखों के सहयोग से बागान-मालिकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

4. अट्ठारहवीं सदी के मध्य काल में, ब्रिटिशों ने उन फसलों जिनकी यूरोप मे आवश्यकता थी, कि खेती को नियंत्रण में रखने के प्रयास किए और अफीम तथा नील की खेती को बढाया और भारत के विभिन्न भागों में किसानों को अन्य फसलें उगाने के लिये विवश किया।

5. उन्नीसवीं सदी में, बागान, मालिकों ने रैयती प्रणाली पर काम किया। इसके अंतर्गत, रैयतों द्वारा बागान मालिकों से एक अनुबंध पर बलपूर्वक हस्ताक्षर करवाए जाते थे। इसी समय पर वे गाँव के मुखिया को भी रैयतों की ओर से अनुबंध पर हस्ताक्षर करने हेतु बाध्य करते थे।

च. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. 12 अगस्त, सन् 1765 को मुगल शासक शाहआलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल का दीवान नियुक्त कर दिया। मुगल लोग राजस्व के रूप में उत्पादन का आधा भाग वसूल करते थे। कंपनी के अधिकारियों ने मुगल प्रशासन की प्रत्येक प्रक्रिया का अध्ययन किया व उसे समझ लिया था। अब, उसे अपने राजस्व संसाधनों को संचालित एवं संगठित करना था और अपने प्रशासन ढाँचे, युद्ध खर्चों व भारतीय सामान के क्रय हेतु और ब्रिटेन भेजने हेतु कोषों को चालू रखने की लागत को वहन करना था। यह वास्तविक घटना संभवत: रॉबर्ट क्लाइव के प्रशासन काल में घटित हुई थी जैसे कि चित्र में दर्शनीय है जिसमें अपनी जिंदगी में अविस्मरणीय पल को सँजोए रखने के

लिए क्लाइव ने चित्रकार को दलाली दी थी। दीवानी का अनुदान ब्रिटिश कल्पना में निश्चित रूप से ऐसी ही घटना थी।

2. कंपनी को जल्दी ही ज्ञात हो गया कि जमींदार लोग भूमि के सुधार में कुछ भी निवेश नहीं करेंगे और जमींदारों द्वारा चुकाया जाने वाला राजस्व उन्होंने बहुत ऊँचा निर्धारित कर रखा था। जो भी राजस्व भुगतान में विफल होता अपनी जमींदारी खो देता। विफल जमींदारी नीलामी बन जाते थे। जितने भी अधिक समय के लिए ऊँची किराया दर पर जमींदार भूमि को किराएदार को पट्टे पर दे देते थे तो वे भूमि सुधार में रुचि नहीं रखते थे।

   किराएदार को भी आगे अपनी भूमि को पट्टे पर देना पड़ता था। क्योंकि, कंपनी का हिस्सा स्थायी रूप से निश्चित था, जमींदार निरंतर किराया बढ़ाते रहते थे और किसानों को साहूकारों से ऋण लेने पड़ते थे। किराया या ऋण भुगतान में विफल होने पर उन्हें अपनी जमीन से बेदखल किया जा सकता था। इसका परिणाम किसानों की ऋणग्रस्तता और भूमिहीनता हुआ।

3. अट्ठारवीं सदी के मध्य काल में, ब्रिटिशों ने उन फसलों जिनकी यूरोप में आवश्यकता थी, कि खेती को नियंत्रण में रखने के प्रयास किए और अफीम तथा नील की खेती को बढ़ाया और भारत के विभिन्न भागों में किसानों को अन्य फसलें उगाने के लिए विवश किया; जैसे-असम में चाय, बंगाल में जूट, संघीय प्रदेश (उत्तर प्रदेश) में गन्ना, मद्रास में धान, पंजाब में गेहूँ, महाराष्ट्र में सूत। अब हम एक फसल की खेती के विषय में अध्ययन करेंगे। कैसे उन्होंने अपनी मनचाही फसल का उत्पादन करवाया। इस कथा से हमें ज्ञात होगा कि उन्होंने गाँवों-देहातों को कैसे उपनिवेशित किया और लोगों के अधिकारों का कैसे पुनर्निरूपण किया।

छ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **भारत में नील की खेती** - नील की खेती की दो प्रणालियाँ थीं-निज और रैयती। निज खेती प्रणाली के अंतर्गत एक संख्या में लोग जमींदारों से भूमि खरीद लेते थे या किराए पर लेते थे और बागान मालिक बन जाते थे। किराए पर श्रमिकों को सीधी भर्ती करके नील की खेती करते थे। बाद में बागान मालिकों को कठिनाई का सामना करना पड़ा कि निज खेती के तहत क्षेत्र का विस्तार कठिन होता जा रहा था। नील की खेती हेतु उपजाऊ जमीन की आवश्यकता होती थी लेकिन वह पहले से ही सघन आबादी वाले स्थान हो गए थे और इस परिदृश्य पर उपार्जन हेतु मात्र छोटे भूखंड ही बचे थे। बागान-मालिकों ने

किसानों को उन क्षेत्रों से बेदखल करके नील कारखानों के आस-पास ही जमीन को पट्टे पर लेने के प्रयास किए।

परंतु इन सभी बातों से विरोधों के साथ कठिनाइयाँ व तनाव ही पैदा हुए। वृहत् बागानों के लिए वृहद् संख्या में श्रम की आवश्यकता थी। साथ ही साथ श्रमिक भी अभी एक साथ उस पर एक ही समय पर जरूरी होते थे। जब किसान अपनी धान की खेती में व्यस्त होते थे। वृहत् स्तर पर निज खेती में अनेक हलों व बैलों की आवश्यकता पड़ती थी। उनकी खरीदारी एक बड़ा निवेश था और उनको किराए पर लेना या उधार लेना भी तब संभव नहीं हो पाता था क्योंकि वे सब उसी समय धान की खेती में व्यस्त होते थे जिस निश्चित समय पर नील के बागान मालिकों को उनकी आवश्यकता होती थी।

2. **नील विद्रोह और उसके पश्चात्** – बागान-मालिकों द्वारा शोषित होने तथा नील की अगली फसल को उत्तम मिट्टी में उगाने हेतु बाध्य करने के कारण नाखुश व अशक्त होकर बंगाल में हजारों रैयतों ने नील की खेती करने से इंकार कर दिया और बागान मालिकों ने लठियालों (लठैतों) को भर्ती कर लिया। वे किसानों और उनके परिवार को ऋण ना चुकाने पर बंदी बनाकर पकड़ लेते थे। उन्हें किसी भी सीमा तक काट दिए जाते थे। यहाँ तक कि मालिकों को लंबी अवधि पर पट्टे पर अपनी जमीन देने पर जमींदार भी नाराज होते थे। 1859 में, रैयतों ने जमींदारों और गाँव प्रमुखों के सहयोग से बागान-मालिकों के विरुद्ध ब्रिदोह कर दिया। उन्होंने लठियालों के साथ जमीनी हुई लड़ाई की और नील कारखानों पर शस्त्रों से हमले किए। रैयतों ने बागान या सहयोगियों व साथियों का बहिष्कार किया व उन्हें पीटा। 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार अन्य विद्रोह के लिए चिंतित हो गई थी। जैसे ही विद्रोह उत्पन्न हुआ यह प्रचलित हो गया और इसका समाचार फैला। 1859 ई० में लेफ्टीनेंट गवर्नर ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया।

मजिस्ट्रेट, एश्ले इडेन ने सूचना पत्र जारी किया जिसमें लिखा था कि रैयतों को नील अनुबंध स्वीकार करने हेतु बाध्य नहीं किया जाएगा। महारानी विक्टोरियों ने घोषणा की कि नील की खेती करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सरकार ने बागान-मालिकों की सुरक्षा हेतु सैन्य बल भेजा और नील की खेती प्रकरण में इसकी प्रणाली की जाँच-पड़ताल करने हेतु नील समिति का गठन किया। समिति ने बागान-मालिकों को दोषी पाया और नील किसानों के साथ उनके उत्पीड़ित तरीकों के लिए उनकी निंदा की। अब इस बात की घोषणा हो गई थी

कि रैयतों के लिए नील की खेती लाभकारी नहीं है। बाद में रैयतों से उन्हें अपने अनुबंध पूरे करने के लिए पूछा गया परंतु बाध्य नहीं किया गया। उन्हें यह भी बताया गया कि भविष्य में वे नील की खेती करने से इंकार कर सकते हैं ।

पाठ-3 : उपनिवेशवाद और राजधानी नगर

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. उड़ीसा
2. 18
3. दिल्ली में
4. शाहजहाँ
5. 1911 ई० में
6. 1819 में

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. प्रेजिडेसियाँ
2. पुलिस अधिनियम
3. हमीदा बानो बेगम
4. कार्नवालिस की कानून संहिता
5. 1857

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✗
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. जेल कानून भारतीय दण्ड संहिता (IPC) ब्रिटिश काल में सन् 1860 मे लागू हुई थी। 1680 के बाद इस पर समय समय पर इसमें संशोधन होते रहे। कोई भी व्यक्ति अगर हत्या का दोषी साबित होता है तो उस पर आईपीसी की धारा 302 लगाई जाती है। इस धारा के तहत उम्रकैद या फाँसी की सजा और जुर्माना हो सकता है।
2. उपनिवेशवाद वह प्रक्रिया है जिसमें अमीर व शक्तिशाली देश को अपना उपनिवेश बनाते है।
3. नगर प्रशासन्न में पुलिस निरीक्षक, थानेदार होते थे।
4. राष्ट्रपति भवन, संसद भवन तथा केन्द्रीय सचिवालय के 'एडविन लुटियन्स' थे।
5. आंग्ल गुरखा युद्व के पश्चात् 1819 ई० में शिमला की खोज हुई थी।
6. मुगल शासन काल के दिल्ली के दो प्रमुख बाजारों के नाम चाँदनी चौक व खारीबावली है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. **पुलिस प्रशासन :** पुलिस आयोग 1860 द्वारा कंपनी युग की थानेदारी पुलिस शासन प्रणाली का पुनरावलोकन किया गया तथा उसके पश्चात् औपनिवेशिक शासन के लिए उपयुक्त संशोधित पुलिस बल का निर्माण करने के उद्देश्य से पुलिस अधिनियम 1861 को अधिनियमित किया गया। संपूर्ण पुलिस विभाग की कार्यकुशलता एवं अनुशासन के लिए उत्तरदायी पुलिस महानिरीक्षक के अधीन सिपाहियों के शक्तिबल से युक्त एक पृथक पुलिस विभाग का निर्माण किया गया। पुलिस महानिरीक्षक की सहायता के लिए पुलिस उपमहानिरीक्षक की नियुक्ति की जाती थी तथा सहायक जिला पुलिस अधीक्षक पुलिस उपमहानिरीक्षक की सहायता करते थे। अधीन पुलिस बल की अवरोही पद क्रम–व्यवस्था इस प्रकार थी–पुलिस निरीक्षक, दीवान, सार्जंट एवं सिपाही। जेल का प्रशासन चलाने हेतु जेल कानून संहिता तैयार की गई थी। पुलिस अधिनियम 1861 के अंतर्गत पुलिस एवं जेल शासन–प्रणाली विकसित की गई थी। यह अधिनियम समय–समय पर किए गए। छोटे–छोटे संरचनात्मक परिवर्तनों सहित औपनिवेशिक शासन की समाप्ति तक निरंतर प्रभावी रहा।

2. **नगरों का विकासः**– उपनिवेशवाद की आवश्यकता को पूरा करने हेतु भारत में अनेक स्थानों पर नए शहर विकसित हुए। प्रशासनिक केंद्रों का फैलाव वृहत महाप्रांत शहरों–मद्रास, कलकत्ता और बंबई से जिला मुख्यालयों के आस–पास के नगरों तक था। निवासों (ब्रिटिश निवासियों के अधिकारिक निवास) के आस–पास भी नगरों का विकास हुआ जैसे कि लखनऊ, पूणे और हैदराबाद में। उन्होंने योजना बनाई और अन्य प्रकार के नगर, उपनिवेश जैसे पहाड़ी स्थलों के विचार को भी बढ़ाया जैसे शिमला और दार्जीलिंग की स्थापना हुई। यह शिमला था जहाँ से भारत की ब्रिटिश सरकार अपने मामलों के कुछ भागों का संचालन करती थी।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **नगर क्षेत्रों का प्रशासन** – उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व भारतीय नगर अत्यधिक सघन क्षेत्र वाले होते थे, जिनमें प्रायः दीवारें बनी होती थीं तथा जिनमें प्रशासनिक संस्थाएँ ग्रामीण क्षेत्र की संस्थाओं से भिन्न थीं।

   नगरों एवं कस्बों की सुरक्षा के लिए उनके चारों ओर दीवार तथा बाँध बनाना आवश्यक था। चहारदीवारी में दीवारें, दरवाजे, फाटक अथवा खिड़कियाँ लगाई जाती थीं। इन चहारदीवारियों में

पीछे की ओर द्वार लगाए जाते थे, सरकारी अभिलेखों में चहारदीवारियों से घिरे क्षेत्र को दीवारयुक्त नगर कहा जाता था। उन्हें थानों तथा वालुकाओं में विभाजित किया गया था, जिन्हें मौहल्लों तथा बस्तियों में उपविभाजित कर दिया गया था। अट्ठारहवीं शताब्दी में दिल्ली में 18 थाने तथा 600 मौहल्ले थे। सन् 1860 के दशक में इंडो-ब्रिटिश सरकार ने नगर निगमों की स्थापना की थी। नगर प्रशासन कोतवाल (नगर मजिस्ट्रेट) द्वारा किया जाता था। थानेदार, मोहल्लेदार, दरोगा या सिपाही प्रशासनिक कार्यों के पर्यवेक्षण में कोतवाल की सहायता करते थे।

स्थानीय शासन : देशी भारतीय शासकों की स्थानीय शासन प्रणाली को कार्नवालिस की कानून संहिता 1793 के आधार पर समाप्त करके जिला मजिस्ट्रेट को अधिकारी नियुक्त किया गया। ग्रामीण तथा क्षेत्र (परगना) स्तर पर स्थापित समस्त प्रशासनिक संस्थाओं को समाप्त कर दिया गया। अब कानून एवं व्यवस्था न्यायाधीश के उत्तरदायित्व का पालन करता था।

2. **दिल्ली नई दिल्ली से पहले** – पुरानी दिल्ली का इतिहास 15वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है। दिल्ली सल्तनत के सुलतानों ने इसे अपने शासनकाल में अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने इसे अपनी सुन्दर स्थापत्य कला और साहित्य से समृद्ध बनाया। सिकन्दर लोदी तथा अमीर खुसरो, निजामुद्दीन औलिया के मकबरे यहीं स्थित हैं। दिल्ली सल्तनत के सुलतानों ने यहाँ कुतुबमीनार, अलाई दरवाजा, कुव्वत-उल-इस्लाम मसजिद, सीरी फोर्ट, कोटला फिरोजशाह किला आदि इमारतों का निर्माण कराया।

इसके बाद दिल्ली पर मुगल वंश के शासकों ने शासन किया। यहाँ शाहजहाँ ने पुराने किले के पास अपने पिता हुमायूँ का मकबरा बनवाया। शाहजहाँ मुगलवंश का **इंजीनियर बादशाह** कहा जाता है, ने दिल्ली को 1639 ई0 में अपनी राजधानी बनाया जिसका नाम उसने शाहजहाँनाबाद रखा। उसने दिल्ली में यमुना नदी के किनारे लाल बलुआ पत्थर से लाल किला और जामा मसजिद बनवाई। शाहजहाँनाबाद शहर के 14 दरवाजे थे तथा उसमें चाँदनी चौक जैसे कई बाजार स्थित थे। शाही जुलूस चाँदनी चौक तथा फैज बाजारों से होकर गुजरता था।

शाहजहाँ के शासनकाल में दिल्ली सूफी संस्कृति का एक प्रसिद्ध केन्द्र रहा था। निजामुद्दीन औलिया एक प्रसिद्ध संत यहीं रहा करते थे। सूफी संस्कृति से संबंधित अनेक दरगाहें, खानगाहें और ईदगाहें यहाँ अभी भी स्थित हैं, परन्तु मुगल शासनकाल में जाति, स्तर एवं वर्ग मतभेद आदि बुराइयाँ भी समाज में प्रचलित थीं। निर्धन लोगों की बस्तियाँ, गली, मुहल्ले अमीर लोगों के गली-मुहल्लों से अलग

होते थे। अमीरों का जीवन वैभवपूर्ण था जबकि गरीब लोग मुसीबतों भरी जिन्दगी बसर करते थे। इसलिए इस शहर को एक आदर्श शहर नहीं कह सकते थे।

1911 ई0 में ब्रिटिश शासनकाल के दौरान भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित कर दी गई। अंग्रेजों ने शहर को दो अलग-अलग भागों में विभाजित कर दिया-एक, काला शहर जिसमें भारतीय रहा करते थे तथा दूसरा, गोरा शहर जिसमें केवल अंग्रेज रहा करते थे। दिल्ली ने 1857 ई0 का विद्रोह देखा जिसका नेतृत्व मुगल बादशाह बहादुरशाह 'जफर' ने किया था। अंग्रेजों ने शहर को जमकर लूटा तथा बहुत-से भारतीयों की हत्या कर दी। मसजिदों को बेकरी की तरह प्रयोग किया गया तथा 1870 ई0 में शाहजहाँनाबाद का पश्चिमी भाग रेलवे लाइन बिछाने के लिए ढहा दिया गया। 1877 ई0 तथा 1911 ई0 में अंग्रेजों ने भारतीयों को प्रभावित करने के लिए दिल्ली दरबारों का आयोजन किया।

पाठ-4 : भारत के शिल्प एवं उद्योग

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. जाँन केम
2. मलमल
3. उत्पत्ति स्थल
4. जमशेदजी नोशेरवान टाटा ने
5. अहमदाबाद में
6. बिहार में

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. छींट
2. गुरु वंदना
3. मद्रास
4. अहमदाबाद
5. उद्योगों

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓
6. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. ब्रिटिश शासन काल में ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादों तथा उन शिल्पकारो पर निर्भर करती थी जो किसानों तथा व्यापारियों के मददगार थे। नील, जूट, अफीम, चीनी, तेल आदि वे कृषि उत्पाद थे जो कारखानों में तैयार किये जाते थे। इनमें से अधिकतर पदार्थों को विदेशी बाजारों के लिये निर्यात कर दिया जाता था।

2. जमशेदजी टाटा (3 मार्च 1839 -19 मई 1904) भारत के महान उद्योगपति तथा विश्वप्रसिद्ध औद्यौगिक घराने टाटा समूह के संस्थापक थे।

3. औपनिवेशिक सरकार के नए वन कानूनों ने वनों को आरक्षित घोषित कर दिया। वनों में लोगों के प्रवेश पर पाबंदी लगने के कारण लौह प्रगलको के लिए कोयला बनाने के लिए लकडी मिलना बंद हो गयी। उन्नीसवीं सदी के अंत तक ब्रिटेन से लोहे और इस्पात का आयात होने लगा, जिसके कारण स्थानीय प्रगलकों द्वारा बनाए जा रहे लोहे की माँग कम होने लगी।

4. समस्त उत्कृष्ट बुने हुए 'मुसलिन' मलकाल कहना आरम्भ कर दिया। दक्षिण पश्चिम में केरल के तटों में कालीकट से विक्रय किए गए वस्त्रों को 'कलिको' की संज्ञा दी।

   अंग्रेजी शब्द चिन्टज की उत्पत्ति हिंदी शब्द छींट से हुई। बाँधने का निर्माण बाँधने व रंगने की प्रक्रिया द्वारा किया जाता हैं।

5. सर्वप्रथम फारक्यूहर तथा मोट्टी ने आधुनिक तकनीक पर आधारित तरीके से इस्पात तथा लोहे बनाने का प्रयास किया।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. जैसे ही ब्रिटेन में सूती उद्योगों का विकास हुआ इसने भारत में सूती वस्त्रोत्पादन को अनेक तरीकों से प्रभावित किया। उदाहरण के लिए- सर्वप्रथम, भारतीय वस्त्रों को अब यूरोपीय एवं अमेरिकी बाजारों में ब्रिटिश वस्त्रों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी थी। दूसरे, इंग्लैंड को वस्त्रों का निर्यात करना कठिनतर हो रहा था। क्योंकि ब्रिटेन में भारत से वस्त्र आयात पर बहुत उच्च शुल्कों को लागू कर दिया गया था।

2. सर्वप्रथम फारक्यूहर तथा मोट्टी ने आधुनिक तकनीक पर आधारित तरीके से इस्पात तथा लोहा बनाने का प्रयास किया परन्तु वे इस कार्य में सफल न हो सके। इसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मद्रास में 1808 ई0 में इस्पात और लौह निर्माण की एक छोटी-सी इकाई प्रारम्भ की परन्तु यह भी सफल नहीं हो सकी। इन सब कारखानों की असफलता के कारणों का अध्ययन करने के पश्चात् **जमशेदजी नोशेरवान टाटा** ने 1907 ई0 में बिहार (अब झारखण्ड में) के सिंहभूमि जिले में स्थित साकची गाँव में टिस्को की नींव रखी। इसके बाद बंगाल में आसनसोल के निकट हीरापुर गाँव में इस्को की स्थापना की। फिर मैसूर राज्य के भद्रावली में मैसूर आयरन एण्ड स्टील वर्क्स की स्थापना की गयी।

   1916 ई0 में भारत में 0.99 लाख टन इस्पात का उत्पादन हुआ जो 1939 ई0 तक बढ़कर 10 गुना हो गया और भारत की

स्वतंत्रता से पूर्व 1945-46 ई0 में यह आँकड़ा 13.13 लाख टन को पार कर गया।

3. सूती वस्त्र उद्योग भारत का प्राचीनतम उद्योग है। भारत में प्रथम सूती कपड़ा मिल की स्थापना 1818 ई0 में बंगाल में कलकत्ता (कोलकाता) के पास घुसरी नामक स्थान पर की गयी थी परन्तु यह उत्पादन करने में असफल रही। दूसरी सूती कपड़ा मिल 1854 ई0 में श्री कांजी डाबर ने बम्बई (मुम्बई) में स्थापित की परन्तु इसकी उत्पादन दर बहुत मन्दी थी। 1879 ई0 तक भारत में कुल मिलाकर 56 सूती कपड़ा मिलें स्थापित हो चुकी थीं। यह देश का एकमात्र ऐसा मशीनीं उद्योग था जिसने 43,000 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया था। इसके उपरान्त अहमदाबाद (गुजरात) में भी कई सूती वस्त्र मिलों की स्थापना की गयी।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. यह भारत का सूती वस्त्र उद्योग के बाद दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है। प्रारम्भ में यह हमारे देश का एक कुटीर उद्योग था। भारत की पहली जूट मिल 1855 ई0 में बंगाल के **सुन्दरसेन** नामक सौदागर के सहयोग से **जॉर्ज आकलैण्ड** ने कलकत्ता के पास **रिसरा** में स्थापित की। पहली पावरलूम जूट वस्त्र मिल कलकत्ता के पास बारानगर में स्थापित की गयी थी। देश की अधिकांश जूट मिलें बंगाल में स्थापित की गयी थीं क्योंकि बंगाल भारत का सर्वाधिक जूट पैदा करने वाला राज्य रहा है और साथ ही यहाँ की मिलों को जल की अबाध आपूर्ति यहाँ बहने वाली नदियों से होती रहती है। बंगाल में बहने वाली प्रमुख नदियाँ गंगा, ब्रह्मपुत्र और हुगली हैं। आपकी जानकारी के लिए यह बताना आवश्यक है कि जूट के पौधों को काटने के बाद कुछ समय के लिए पानी में डुबोये रखा जाना जरूरी है क्योंकि इससे मुख्य तने से जूट के रेशे अलग हो जाते हैं। 1879 ई0 तथा 1884 ई0 के बीच की अवधि की अपेक्षा भारत में जूट मिलों की संख्या 1945-1946 ई0 की अवधि में 21 से बढ़कर 111 हो गयी थी।

   ब्रिटिश शासनकाल में इण्डोनेशिया, घाना और नाइजीरिया के प्रतिस्पर्धात्मक विकास के कारण जूट का निर्यात लगातार घटता चला गया।

2. सूती वस्त्र उद्योग भारत का प्राचीनतम उद्योग है। भारत में प्रथम सूती कपड़ा मिल की स्थापना 1818 ई0 में बंगाल में कलकत्ता (कोलकाता) के पास घुसरी नामक स्थान पर की गयी थी परन्तु यह उत्पादन करने में असफल रही। दूसरी सूती कपड़ा मिल 1854 ई0 में श्री कांजी डाबर ने बम्बई (मुम्बई) में स्थापित की परन्तु इसकी उत्पादन दर बहुत मन्दी थी। 1879 ई0 तक भारत में कुल मिलाकर

56 सूती कपड़ा मिलें स्थापित हो चुकी थीं। यह देश का एकमात्र ऐसा मशीनीं उद्योग था जिसने 43,000 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया था। इसके उपरान्त अहमदाबाद (गुजरात) में भी कई सूती वस्त्र मिलों की स्थापना की गयी। 1914 ई0 तक भारत में 264 सूती वस्त्र मिल स्थापित हो चुके थे जिनमें लगभग 3 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया। प्रथम विश्व युद्ध (1914 ई0) के बाद भारत में जापान तथा अमेरिका के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन गिर गया था। भारतीय सूती वस्त्रों की निर्माण लागत जापान की निर्माण लागत से 60% अधिक थी।

1911 ई0 में भारत में सूती वस्त्र मिलों की संख्या 1951 ई0 की अपेक्षा 261 से 445 रह गयी थी। अन्य मिलों की स्थापना कानपुर, शोलापुर, मद्रास, इन्दौर आदि में की गयी।

पाठ-5 : राष्ट्र को शिक्षित एवं देशज को सभ्य बनाना

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. शांति निकेतन
2. अंग्रेजी
3. प्राच्चवादियों द्वारा
4. असभ्य
5. कलकत्ता

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. राजा राममोहन राय
2. शांति प्रदान करता है।
3. अंग्रेजीं दार्शनिक, ओरिएंटलिस्ट और न्यायविद
4. 1854 में
5. महात्मा गाँधी जी

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✓
5. ✓

घ. मिलान करो -

1. महात्मा गाँधी
2. पाठशाला
3. विलियम जॉन्स
4. थॉमस मैकाले

5. रविंद्रनाथ टैगोर

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. मैकाले के अनुसार भारत एक असभ्य देश था जिसे सभ्य बनाने की जरुरत थी।

   उनका विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यवहारिक एवं उपयोगी चीजों का पठन–पाठन होना चाहिये। अतः भारतीयों को उन वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकासों से अवगत कराया जाना चाहिए जिनका उदय पश्चिम में हुआ है।

   उन्होंने महसूस किया कि अंग्रेजी भाषा के ज्ञान से भारतीयो को दुनिया के कुछ बेहतरीन साहित्यो को पढने का सुअवसर प्राप्त होगा। यह उन्होने पश्चिमी विज्ञान एवं दर्शन के विकास से भी अवगत कराएगी।

2. **प्राच्यवादी** – ब्रिटिश विद्वान दो वर्गों में विभाजित थे– प्राच्यवादी एवं आंग्लवादी जिनकी अलग–अलग विचार–धाराएँ थी। प्राच्यवादी वे थे जो एशिया की प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से 'भाषाओं' एवं संस्कृति की विद्धतापूर्वक शिक्षा के पक्ष में थे।

   आंग्लवादी – आंग्लवादी वे लोग थे जिन्होंने प्राच्यवादियों के अध्ययन के विचार का विरोध किया। उन्होंने भारत में अंग्रेजी शिक्षा पर बल दिया जैसे कि यह लोगों को पश्चिमी विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र में होने वाले विकासों के विषय में जागरुक करेगी।

   देशज भाषाएँ – उनकी विचारधारा में, वे पुस्तकें देशज भारतीयों के वास्तविक विचारों एवं नियमों को व्यक्त कर सकते थे। जॉन्स एक भाषा विषयक थे। उन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था और उन्होंने अनेक भाषाओं का अध्ययन किया था, जैसे:–ग्रीक लैटिन, फ्रेंच और अंग्रेजी और उन्होंने अपने एक मित्र से अरबी को भी ग्रहण किया तथा फारसी भी सीखी। जल्दी ही उसने संस्कृत भाषा की सूक्ष्मताएँ, व्याकरण एवं काव्य, प्राचीन पुस्तकें व नियम, दर्शनशास्त्र, धर्म, राजनीति, नैतिकता, अंकगणित चिकित्सा–विज्ञान एवं अन्य विज्ञानों का अध्ययन किया। बाद में वह हेनरी कॉलब्रूक एवं नैथेनियल हैलहेड के साथ जुड़ गए और ''एशियाटिक रिसर्चस'' नामक एक जर्नल पत्रिका शुरू की।

3. महात्मा गाँधी भारतीयों को उनके अनुसार इससे व्यक्ति के मस्तिष्क एवं आत्मा का विकास होगा। उनका सोचना था कि

केवल पढना-लिखना अपने-आप में शिक्षा नहीं है। लोगों को अपने हाथ से काम करना सीखना चाहिए, उन्हें विभिन्न निपुणताओं को सीखना चाहिए तथा उन्हें यह जानना चाहिए कि विभिन्न चीजें किस तरह कार्य करती है।

4. रविंद्रनाथ ने प्राकृतिक वातावरण में ही क्रियात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

5. ब्रिटिशों ने देशवासियों के दिलों को जीतने की आशा रखी, तभी विदेशी शासकों की उनके अधीनस्थ प्रजा द्वारा सम्मानित होने की उम्मीद बनती थी।

6. 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग ने भारत में शिक्षा की समीक्षा करते हुए ब्रिटिश हुकुमत से कहा कि शासकीय सहायता प्राप्त पाठशालाओं में बिना भेदभाव के सभी जाति के बच्चो को प्रवेश दिया जाए।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. **प्राच्यवादी** - ब्रिटिश विद्वान दो वर्गों में विभाजित थे-प्राच्यवादी एवं आंग्लवादी जिनकी अलग-अलग विचार-धाराएँ थीं। प्राच्यवादी वे थे जो एशिया की प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से भाषाओं एवं संस्कृति की विद्वतापूर्ण शिक्षा के पक्ष में थे। वे स्कूल और कॉलेजों में संस्कृत एवं फारसी पुस्तकों के अध्ययन को प्राथमिकता देते थे। जॉन्स और हेनरी थॉमस कॉलब्रूक जिन्होंने संस्कृत और फारसी पुस्तकों का अध्ययन किया और पूर्व तथा पश्चिम दोनों की प्राचीन सभ्यता को गहन आदर भाव के साथ बाँटा।

   आंग्लवादी - आंग्लवादी वे लोग थे जिन्होंने प्राच्यवादियों के अध्ययन के विचार का विरोध किया। उन्होंने भारत में अंग्रेजी शिक्षा पर बल दिया जैसे कि यह लोगों को पश्चिमी विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र में होने वाले विकासों के विषय में जागरुक करेगी।

   सन् 1830 तक, प्राच्यवादियों का शक्तिपूर्वक विरोध किया जा रहा था। उसी समय, थॉमस बेबिंग्टन मैकाले ने घोषणा की कि ''यूरोपीय पुस्तकालय की एक अलमारी भारत और अरब के संपूर्ण मूल साहित्य के बराबर थी। ''मैंकाले के विचार को मानते हुए ''द इंग्लिश एजुकेशन एक्ट 1835'' प्रस्तुत किया। यह निर्णय अंग्रेजी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने हेतु एवं प्राच्यवादी संस्थानों जैसे- कलकत्ता मदरसा एवं बनारस संस्कृत कॉलेज के प्रचार को रोकने हेतु लिया गया। स्कूलों के लिए अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकों की रचना शुरू हो गई थी।

2. **वाणिज्य की शिक्षा : वुड का घोषणा पत्र (1854)** – सन् 1854 में एक आधिकारिक रिपोर्ट जिसके लेखक चार्ल्स वुड थे को 'वूड का घोषणा पत्र' के नाम से पुकारा गया। जिसमें भारत के अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों, कॉलिजों एवं विश्वविद्यालयों में श्रेणीबद्ध तंत्र को लागू करने का परामर्श दिया गया था। भारतीयों में शिक्षा का विस्तार करने के लिए यह दस्तावेज प्रथम व्यापक योजना थी और जिसे भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया।

1. इसके अंतर्गत श्रेणीबद्ध स्कूलों की शृंखला की स्थापना की जानी थी; जैसे:–विश्वविद्यालय, कॉलेज, हाईस्कूल, मिडिल तथा सेकेंडरी स्कूल।

2. भारत सरकार से जनसमूह की शिक्षा की जिम्मेदारी उठाने के लिए पूछा गया इस प्रकार का कम से कम कागजों में तो 'अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत' का परित्याग हो गया था।

3. स्वयं कीजिए।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **शिक्षा–महात्मा गाँधी के विचार में** – गाँधीजी ने कहा कि उपनिवेशीय शिक्षा ने भारतीयों के दिमागों में निकृष्टता की भावना पैदा कर दी थी। भारतीयों ने पश्चिमी सभ्यता को उत्कृष्ट मानकर अपनी सभ्यता के गौरव को नष्ट कर दिया। उन्होंने ब्रिटिश मामले को प्रोत्साहित करना एवं आदर्श मानना शुरू कर दिया है उपनिवेशीय शिक्षा में जहर है, महात्मा गाँधी ने कहा, यह पापयुक्त है, इसने भारतीय को दास बना दिया है, यह उन्हें बुरे सम्मोहन में जकड़ देगी। महात्मा गाँधी एक ऐसी शिक्षा की कामना करते थे जो भारतीयों को अपने खोए हुए गौरव और आत्मसम्मान को वापस लेने में मदद करें। एक राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्होंने छात्रों से इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थान छोड़ने की अपील की कि वे ब्रिटिश को यह दिखा दें कि वे अब और दास बने रहने की इच्छा नहीं रखते। उन्होंने यह दृढ़तापूर्वक सोचा कि अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा ने भारतीयों को जकड़ लिया था, उन्हें अपने ही सामाजिक दायरे से दूर कर दिया था और उन्हें अपने ही देश की भूमि पर 'अजनबी' बना दिया था। अंग्रेज यह नहीं जानते थे कि जनसमूह को कैसे संबोधित करें। उन्होंने बहस की कि शिक्षा को किंचित व्यक्ति का दिमाग एवं आत्मा का विकास करना चाहिए। साक्षरता या स्वयं से साधारणतः लिखना–पढ़ना सीख लेना कोई शिक्षा के रूप में नहीं गिनी जाती हैं। लोगों को अपने हाथों से काम करना होगा, शिल्प सीखना होगा और यह

जानना होगा कि कैसे वस्तुएँ कार्य करती हैं। इससे दिमाग का विकास होगा एवं उनकी समझने की क्षमता बढ़ेगी।

2. गर्वनर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक एक कुशल प्रशासक था। 1834 में लॉर्ड मैकाले गर्वनर जनरल की काउंसिल का कानूनी सलाहकार बनकर भारत आया। उस समय बैंटिक ने उसे जन शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया और उसे 1812 के आज्ञापत की धारा 43 का अर्थ स्पष्ट करने का कार्य सौंपा। इसके साथ ही उसने बैप्टिस्ट मिशनरी सर विलियम एडम (Sir William Adam) को कंपनी के अधीन तत्कालीन बंगाल और बिहार प्राप्त मे शिक्षा की स्थिति का सर्वेक्षण करने का कार्य सौंप कर उससे यह अपेक्षा की कि वह कंपनी के अधाीन भारतीय क्षेत्र मे भारतीयों की शिक्षा व्यवस्था के विषय में अपने सुझाव प्रस्तुत करें। वस्तुतः भारतीयों के शिक्षा के संदर्भ में लार्ड मैकॉले पार्चाव्यवादी था पर सर विलियम एडम प्राच्यवादी था। विलियम एडम एक समर्पित एवं उत्साही मिशनरी था। उसने लॉर्ड बैंटिक द्वारा नई शिक्षा नीति की घोषणा के बाद भी अपना सर्वेक्षण कार्य जारी रखा और अपनी रिपोर्ट लॉर्ड ऑकलैण्ड को तीन किस्तों में निम्न प्रकार प्रस्तुत की–

एडम द्वारा प्रस्तावित शिक्षा योजना–

1. भारत कृषि प्रधान देश है यहाँ कृषि शिक्षा की व्यवस्था प्रारम्भ से ही की जानी चाहिये।
2. ग्रामीण स्कूलों को कृषि योग्य भूमि दी जाए। इससे निम्न प्रकार दो लाभ होगे–
   1. प्रथम, बच्चों को कृषि की शिक्षा दी जा सकेगी।
   2. द्वितीय, इससे स्कूलों का कुछ व्यय भी निकलेगा।
3. निस्यन्दन सिद्धांत जन शिक्षा विरोधी है अतः इसे लागू न किया जाये।
4. शिक्षकों के वेतन बढाये जाये, उनकी स्थिति मे सुधार लाया जाये।
5. विद्यालयों और शिक्षकों के निरिक्षण के लिये प्रत्येक जिले मे निरीक्षकों को नियुक्त किया जाये।
6. सभी भारतीय स्कूलों को सरकार के द्वारा आर्थिक सहायता दी जाये और इनकी स्थिति में सुधार लाया जाये।
7. छात्रों की परिक्षाएँ अपने निर्धारित समय पर सम्पन्न कराई जाए इससे वर्तमान अनिश्चितता का निवारण होगा।

पाठ-6 : महिलाएँ एवं सुधार

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 1872 ई० में
2. ये सभी
3. पण्डित रमाबाई
4. कादिम्बिनी बसु

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. आमार जीवन
2. छोटी आयु
3. 1872 ई०
4. राजा राममोहन राय

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. महिलाएँ निम्न स्तर, शिक्षा की अपेक्षा, बाल विवाह, सती प्रथा, परदा प्रथा, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, संपत्ति में उत्तराधिकार न होना आदि अनेक बुराईयों से पीडित रही हैं।
2. सती एक पुरातन प्रथा है जिसमें विधवा स्त्री को उसके पति की चिता पर जीवित ही जला दिया जाता था। यह कार्य विधवा के लिये स्वैच्छिक माना जाता था तथा इसे अनुपम धर्मनिष्ठा के रूप में देखा जाता था किंतु व्यवहार में इसे विधवा पर थोपा जाता था। जिसके लिये विभिन्न प्रकार के सामाजिक दबाव तथा आर्थिक कारक उत्तरदायी थे।
3. समाज सुधारकों ने बाल विवाह का डटकर विरोध किया। बंगाल, बिहार, राजस्थान और उडीसा में लोग अपने छोटी आयु के बच्चो का विवाह कर देते थे। कभी-कभी दूल्हे और दुल्हन की आयु में बहुत अधिक अन्तर होता था।
4. साल 1889 मे रमाबाई भारत वापस आई और 11 मार्च 1889 को उन्होने 20 लडकियों के साथ मिलकर मुबंई में 'शारदा सदन' खोला। इसके अंतर्गत महिलाओं को पढना लिखना, इतिहास, पर्यायवरण आदि से जुडी जानकारी तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता था और महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा का आश्वासन तथा अजीविका के लिये सामाजिक स्वीकृति भी प्रदान की।
5. कन्या-शिशु हत्या नवजात कन्याओ का सोचा-समझा हत्या है। कन्या शिशु हत्या के इतिहास वाले देशों में लिंग-चयनात्मक गर्भपात की आधुनिक प्रथा पर अक्सर एक मुद्दे के रूप में चर्चा की जाती है। कन्या शिशु हत्या चीन, भारत और

पाकिस्तान जैसे कई देशों में चिंता का एक प्रमुख कारण है।

6. 14 वर्ष मे कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगा दी गई। 1930 ई० में बाल विवाह को रोकने के लिये 'शारदा एक्ट' पास कराया गया। इसके अनुसार 14वर्ष से कम कन्या तथा 18 वर्ष से कम बालक (लड़का) के विवाह पर रोक लगा दी गई।

7. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (26 सितम्बर 1820–29 जुलाई 1891) उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, अनुवादक, मुद्रक प्रकाशक, उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति थे। वे बंगाल के पुनर्जागरण के स्तम्भों में से एक थे। उनके बचपन का नाम ईश्वर चन्द्र बन्धोपाध्याय था।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. इनका जन्म सन् 1820 में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य नियुक्त हो गए थे। कॉलेज को इनके द्वारा दी गई सेवाओं के उपहार स्वरूप उन्हें विद्यासागर की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने समाज में स्त्रियों के स्तर को उठाने हेतु लोगों का ध्यान आकर्षित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्त्रियों की शिक्षा में उनकी अत्यधिक रुचि थी। इन्होंने अनेक मामलों में आधुनिक भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया। विधवा, पुनर्विवाह के पक्ष में उन्होंने एक लंबा आंदोलन चलाया। हिंदू विधवाओं की पीड़ाओं से इनके अंदर मानवताप्राय: उत्कर्ष तक पहुँच गया था। उनकी दशा सुधारने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। सन् 1854 में उन्होंने एक पत्र लिखा जिसमें हिंदू शास्त्रों द्वारा पुनर्विवाह पर वर्जना नहीं होने तथा विवाह की अनुमति को सिद्ध किया गया था। उन्होंने स्वयं अनेक विधवाओं के पुनर्विवाह संपन्न कराए।

2. **बाल विवाह :** समाज सुधारकों ने बाल विवाह का डटकर विरोध किया। बंगाल, बिहार, राजस्थान और उड़ीसा में लोग अपने छोटी आयु के बच्चों का विवाह कर देते थे। कभी-कभी दूल्हे और दुल्हन की आयु में बहुत अधिक अन्तर होता था। जब दुल्हन युवा अवस्था को प्राप्त होती थी तो उसका दूल्हा बुढ़ापे में कदम रख देता था। उसका दाम्पत्य जीवन दयनीय हो जाता था और उनके बीच अनेक झगड़े उत्पन्न हो जाते थे। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती और अंग्रेजों ने इस कुप्रथा का खुलकर विरोध किया और इसको रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1872 ई0 में **'नेटिव मैरिज एक्ट'** पास किया। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगा दी गई। 1930 ई0 में बाल

विवाह को रोकने के लिए **'शारदा एक्ट'** पास कराया गया। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम कन्या तथा 18 वर्ष से कम बालक (लड़का) के विवाह पर रोक लगा दी गई।

3. **ज्योतिराव फुले** – उनका जन्म 1827 ई0 में महाराष्ट्र में हुआ था। वह निम्न जातियों के नेता बन गये। उन्होंने इस बात की वकालत की कि सवर्णों को दलितों की भूमि लेने का अधिकार नहीं है। उन्होंने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध आन्दोलन चलाया तथा दलितों (निम्न जातियों) के लोगों को ब्राह्मणों का विरोध करने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। ब्राह्मण स्वयं को आर्य कहकर पुकारते थे। उन्होंने सवर्णों द्वारा दलितों से किये जाने वाले दुर्व्यवहार और शोषण का विरोध किया। उन्होंने **'सत्यशोधक समाज'** की स्थापना की जिसने जातिवाद का विरोध किया और 1873 ई0 में 'गुलामगिरी' नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उन्होंने दलित जाति से संबंधित लोगों को जागरूक करने का वर्णन किया है।

4. **मुसलमानों में सुधार आंदोलन** – मुसलमानों के सुधारकों में सर सैयद अहमद खान (1817–99 ई०) महानतम थे। एक समाज–सुधारक के रूप में उन्होंने मुस्लिम महिलाओं की पिछड़ी दशा पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने परदा प्रथा की समाप्ति तथा स्त्रियों की दिशा के प्रसार की वकालत की। उन्होंने बहुपत्नी–प्रथा तथा सहज तलाक की निंदा की।

   मुसलमान महिलाएँ संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित थीं तथा उन्हें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के कोई अवसर प्राप्त नहीं होते थे। शताब्दी के अंत तक भोपाल की बेगम सुलतान जहाँ की सहायता से उन्हें पत्रिकाएं प्रारम्भ करने में सफलता मिली जिनमें परदा तथा अन्य कुरीतियों की आलोचना की गई थीं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **ईश्वरचंद्र विद्यासागर** – इनका जन्म सन् 1820 में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य नियुक्त हो गए थे। कॉलेज को इनके द्वारा दी गई सेवाओं के उपहार स्वरूप उन्हें विद्यासागर की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने समाज में स्त्रियों के स्तर को उठाने हेतु लोगों का ध्यान आकर्षित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्त्रियों की शिक्षा में उनकी अत्यधिक रुचि थी। इन्होंने अनेक मामलों में आधुनिक भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया। विधवा, पुनर्विवाह के पक्ष में उन्होंने एक लंबा आंदोलन चलाया। हिंदू विधवाओं की पीड़ाओं से इनके अंदर मानवताप्राय: उत्कर्ष तक पहुँच गया था। उनकी दशा सुधारने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। सन् 1854 में उन्होंने एक

पत्र लिखा जिसमें हिंदू शास्त्रों द्वारा पुनर्विवाह पर वर्जना नहीं होने तथा विवाह की अनुमति को सिद्ध किया गया था। उन्होंने स्वयं अनेक विधवाओं के पुनर्विवाह संपन्न कराए।

2. स्त्रियों के स्तर को उठाने हेतु लोगों का ध्यान आकर्षित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्त्रियों की शिक्षा में उनकी अत्यधिक रुचि थी। इन्होंने अनेक मामलों में आधुनिक भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया। विधवा, पुनर्विवाह के पक्ष में उन्होंने एक लंबा आंदोलन चलाया। हिंदू विधवाओं की पीड़ाओं से इनके अंदर मानवताप्राय: उत्कर्ष तक पहुँच गया था। उनकी दशा सुधारने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। सन् 1854 में उन्होंने एक पत्र लिखा जिसमें हिंदू शास्त्रों द्वारा पुनर्विवाह पर वर्जना नहीं होने तथा विवाह की अनुमति को सिद्ध किया गया था। उन्होंने स्वयं अनेक विधवाओं के पुनर्विवाह संपन्न कराए।

पाठ–7 : ब्रिटिश शासन का भारत पर प्रभाव

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. रैयमवाड़ी
2. 1822
3. ये सभी
4. 1813 ई० में

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. आधा भाग
2. हाल्ट मैंकेन्जी
3. भारतीय
4. उद्योग और हस्तशिल्प
5. अवैधानिक

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भू–राजस्व इकट्ठा करने के लिये रैयतवाडी व्यवस्था को लागू किया गया। भूमि जोतने वाले को रैयत (काश्तकार) कहा जाता था।
2. सर जॉन शोर द्वारा प्रस्तावित भू–राजस्व नीति के अनुसार लॉर्ड कार्नवालिज ने 1793 में बंगाल और बिहार में स्थायी बन्दोबस्त व्यवस्था लागू की।
3. लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भू–राजस्व इकट्ठा करने के लिये रैयतवाडी व्यवस्था को लागू किया गया।

4. पंजाब, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गाँवों के समूहों को महल कहते हैं। महल के मुखिया को असामियो (किसानों) से भू-राजस्व इकट्ठा करना पडता था। इस व्यवस्था को महलवाडी व्यवस्था कहते थे। 1822 ई० में इसे हॉल्ट मैकेन्जी नामक अंग्रेज ने लागू किया था।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. इस व्यवस्था को 1820 ई0 में थामस मुनरो ने लागू किया इसलिए इसे **मुनरो सिद्धांत** के नाम से भी जानते हैं। यह व्यवस्था काश्तकारों के नारकीय जीवन का कारण बनी परन्तु वे जमींदारों की जगह भू-स्वामी बन गये।

2. ब्रिटिश सरकार की आर्थिक कूटनीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को ध्वस्त कर दिया। कंपनी की आर्थिक नीति अंग्रेजों के व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने की थी। उनकी आर्थिक नीति का लक्ष्य भारतवासियों का शोषण करके ब्रिटिश सरकार को अधिकाधिक लाभ पहुँचाना था। इस कूटनीति से भारतीय कृषि, व्यापार तथा उद्योग को भारी हानि हुई। इसके अतिरिक्त कंपनी ने भारत में निम्न व्यवस्थाएँ लागू की, जिससे भारत के उद्योगों और व्यापार पर पूरी तरह कंपनी का एकाधिकार बन गया।

3. भारत में अंग्रेजों का प्रमुख उद्देश्य शांति और कानून व्यवस्था को कायम रखना था। अंग्रेजी शासन तीन स्तंभों पर आधारित था–लोकसेवा, पुलिस तथा सेना। भारत में लोक सेवा के आने से प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार कम हुआ। शासकों की इच्छा पर आधारित नियम कानून की जगह लिखित नियम कानून बनाए गए। लोगों को न्याय देने के लिए प्रत्येक जिले में न्यायालय खोले गए। इस कानून की नजर में सभी लोग समान थे। अंग्रेजों ने सभी राज्यों को राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से एकीकृत कर लिया था।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **उद्योग और व्यापार पर प्रभाव** – अंग्रेजों ने कूटनीति अपनाकर भारत के तैयार मालों को इंग्लैंड में बेचने के लिए 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक सीमा शुल्क लाद दिया, जिससे इंग्लैंड में उसकी खपत समाप्त हो गई। वे भारत से सस्ते मूल्य पर कच्चा माल इंग्लैंड ले जाते और तैयार माल भारत लाकर बेच देते थे। इस प्रकार भारत के उद्योग और हस्तशिल्प नष्ट हो गए। शिल्पी तथा श्रमिक बेरोजगार हो गए। भारत उनकी कृषि उत्पादक बस्ती बनकर रह गया था, जो उनके लिए सस्ते मूल्य पर कच्चा माल उगाता और उनके तैयार मालों को ऊँचे मूल्य पर खपाता था। औद्योगिक क्राँति जहाँ इंग्लैंड के उद्योगों और

शिल्प के लिए वरदान सिद्ध हुई वही भारत के लिए अभिशाप बनकर रह गई। भारत के उद्योगों व व्यापार पर पूरी तरह कंपनी का एकाधिकार बन गया।

2. उन्नीसवीं सदी के आरम्भ तक इन शिल्पों और उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान था लेकिन उसके बाद तेजी से पतन हुआ। इसके कई कारण थे :-

   1. ब्रिटिश प्रदेशों में राजे-रजवाड़े धीरे-धीरे खत्म हो जाने के कारण उत्तम किस्म की वस्तुओं की माँग कम हो गई।
   2. इंग्लैंड में कपड़ा उद्योग का विकास हो रहा था। उसी समय औद्योगिक क्रांति और नई मशीनों ने इंग्लैंड के कपड़ा उद्योग की मदद की। इससे भारतीय कपड़े का निर्यात कम हो गया।
   3. कंपनी के अफसरों ने भारतीय उत्पादकों को मजबूर किया कि वे कपड़ा तथा अन्य वस्तुओं के बाजार भाव से 20 से 40 प्रतिशत तक कम कीमतें लें। कंपनी के अफसर दक्कन को थोक में खरीदते थे और उसे ऊँची कीमतों पर बंगाल के बुनकरों को बेचते थे। इन सब कारणों से सूती कपड़ा उद्योग चौपट हो गया।
   4. मशीनों से बने सस्ते कपड़ों के आने से भारतीय कपड़ा उद्योग को सबसे बड़ा धक्का लगा।
   5. इंग्लैंड से आने वाली वस्तुओं पर चुंगी नहीं लगती थी। जबकि भारत से इंग्लैंड पहुँचने वाली वस्तुओं पर चुंगी लगती थी। इस कारण भारत में ब्रिटिश माल की बाढ़ आ गई।

3. **अस्थायी बंदोबस्त :** सर जॉन शोर द्वारा प्रस्तावित भू-राजस्व नीति के अनुसार लार्ड कार्नवालिस ने 1793 में बंगाल और बिहार में स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था लागू की। इस व्यवस्था में सर्वाधिक लगान देने वाले जमींदार से 10 वर्षीय बंदोबस्त करके, उन्हें भूमि का स्वामित्व दे दिया जाता था। कुल भूमि कर का 10/11 या 9/10 भाग कंपनी को प्राप्त होता था।

   रैयतवाड़ी व्यवस्था : लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भू-राजस्व इकट्ठा करने के लिए रैयतवाड़ी व्यवस्था को लागू किया गया। भूमि जोतने वाले को रैयत (काश्तकार) कहा जाता था। यह व्यवस्था काश्तकारों और सरकार के बीच भूमि बन्दोबस्त थी। भू-राजस्व 30 वर्षों की अवधि के लिए निश्चित कर दिया गया था। काश्तकार सरकार को भू-राजस्व के रूप में उपज का आधा भाग देते थे। इस व्यवस्था को 1820 ई0 में थामस मुनरो ने लागू किया इसलिए इसे **मुनरो सिद्धांत** के नाम से भी जानते हैं। यह व्यवस्था काश्तकारों के

नारकीय जीवन का कारण बनी परन्तु वे जमींदारों की जगह भू-स्वामी बन गये।

महलवाड़ी व्यवस्थाः पंजाब, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गाँवों के समूहों को महल कहते थे। महल के मुखिया को असामियों (किसानों) से भू-राजस्व इकट्ठा करना पड़ता था। इस व्यवस्था को **महलवाड़ी व्यवस्था** कहते थे। 1822 ई0 में इसे **हॉल्ट मैकेन्जी** नामक अंग्रेज ने लागू किया था। यह भी एक दोहरा बन्दोबस्त था क्योंकि इसे पूरे गाँव के समुदायों के साथ सामूहिक तौर पर तथा निजी तौर पर भी किया जाता था। इसने किसानों की दशा बिगाड़ दी तथा गाँव के मुखिया को सम्पन्न कर दिया।

पाठ-8 : उन्नीसवीं शताब्दी-राष्ट्रवाद का उदय

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 18 अप्रैल, 1858 को
2. 1763 में
3. रंगून

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. सिपाही
2. स्वशासन
3. फकीरों, सन्यसियों
4. परिवहन और संचार
5. दमनकारी

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗
5. ✗

घ. मिलान करो -

1. झाँसी
2. रूहेलखंड
3. लखनऊ
4. जगदीशपुर
5. दिल्ली
6. कानपुर

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. सिख धर्म में आई बुराइयों को दूर करने तथा उसे शुद्ध करने के लिए पंजाब में कूका आंदोलन चलाया गया। इसके नेता भगत जवाहर लाल (मियाँ साहब) तथा उनके शिष्य बालक सिंह थे। उन्होंने मूर्ति पूजा, जातिगत भेदभाव, नशीले पदार्थ व शराब का सेवन, मांस आदि का विरोध किया। इस आंदोलन का मुख्यालय पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में हजारा के स्थान पर था। अंग्रेजों द्वारा पंजाब विजित करने के बाद यह धार्मिक सामाजिक

आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन बन गया। सिख प्रभुसत्ता की पुनर्स्थापना और ब्रिटिश लोगों को पंजाब से बाहर निकालना इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बन गया। अंग्रेजों के लिए यह आंदोलन चिंता का विषय बन गया। ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन के दमन के अनेक प्रयत्न किए। अंग्रेजों ने प्रमुख कूका नेता रामसिंह को निर्वासित कर 1872 ई० में रंगून भेज दिया। कूका आंदोलन इसके बाद कमजोर होने लगा।

2. बैरकपुर में 34वीं इन्फेंट्री के एक सैनिक मंगल पांडे ने 29 मार्च, 1857 ई० को अपने साथियों से नए कारतूसों को प्रयोग न करने के लिए कहा। उसे अंग्रेजों ने बंदी बनाकर 5 अप्रैल को फाँसी दे दी। इस कारण मेरठ, दिल्ली, झाँसी, कानपुर, लखनऊ आदि के सैनिकों में विद्रोह की भावना भड़क उठी।

   मेरठ के 85 सैनिकों ने 9 मई, 1857 ई० को नए कारतूस प्रयोग करने से इनकार कर दिया। उन्हें इस पर 10 वर्ष के कठोर कारावास का दंड दिया गया। 10 मई को घुड़सवारों ने क्रुद्ध होकर जेल पर हमला बोल दिया तथा बंदी सैनिकों को आजाद करा लिया और अनेक अंग्रेज अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया।

3. 1857 की क्रांति यद्यपि सफल नहीं हुई परंतु इस क्रांति का हमारे देश के इतिहास में विशेष महत्त्व है। इस क्रांति में हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रादुर्भाव हुआ। दोनों संप्रदाय के लोगों ने कंधे-से-कंधे मिलाकर इस क्रांति में भाग लिया। इस क्रांति के पश्चात् भारतवासियों में स्वाधीनता के लिए संघर्ष की भावना प्रबल हुई जिसके फलस्वरूप 1885 ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना के साथ राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस क्रांति के पश्चात् अंग्रेजों ने भी यह महसूस किया कि अब उन्हें भारत में अपनी सत्ता कायम रखने के लिए संवैधानिक सुधार करने होंगे। विद्रोह के बाद कंपनी का शासन खत्म हो गया और ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपने साम्राज्य पर सीधे शासन करना शुरू कर दिया।

4. भारत के इतिहास में सन् 1857 का विद्रोह एक ही बड़ा महत्त्वपूर्ण विद्रोह था। इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है। इस विद्रोह के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सैनिक कारण थे।

   दिल्ली - मेरठ से सैनिक दिल्ली की ओर चले। रास्ते में अनेक पैदल सैनिक तथा अनेक नागरिक भी उनके साथ चल दिए। दिल्ली के लाल किले पर उन्होंने अधिकार कर लिया और बहादुरशाह जफर को अपना सम्राट घोषित कर दिया बरेली

में मुगल सेना के नायक बख्त खाँ ने भी विद्रोह कर दिया तथा वह अपनी सेना के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गया। 20 सितबंर, 1857 ई० को ब्रिटिश कमांडर निकल्सन ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। बहादुरशाह जफर, को बंदी बनाकर रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

5. भारत में अनेक वनाच्छादित एवं पहाड़ी क्षेत्र शताब्दियों से आदिवासियों के निवास स्थान रहे हैं। अंग्रेजों ने अनेक क्षेत्रों पर जूट, नील, अफीम आदि की खेती करने के लिए अधिकार कर लिया। आदिवासी अपने ही क्षेत्रों में भूमिहीन मजदूर बनकर रह गए। इस कारण उनमें आक्रोश बढ़ता गया। इस कारण खान देश, मालवा एवं धार के भील मानभूल एवं राँची में मुंडा तथा मेघालय के खासी विद्रोह पर उतारू हो गए। बंगाल एवं बिहार में संथालों का विद्रोह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

6. लार्ड डलहौजी ने अपनी साम्राज्यवादी एवं विलय की नीति के कारण अनेक देशी राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया था, जैसेः-सतारा, नागपुर, झाँसी, अवध आदि जिससे इनके शासक अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हो गए। अंग्रेजों ने उच्च वर्ग के लोगों को पेंशनों तथा उपाधियों से वंचित कर दिया था।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **ब्रिटिश शासन से विद्रोह** - अंग्रेजी दमनकारी नीतियों ने भारतीयों को नाराज कर दिया। 1756 से 1856 ई० के बीच देश में अंग्रेजों के खिलाफ अनेक विद्रोह हुए लेकिन वे सभी विद्रोह असंगठित एवं स्थानीय थे। ये सभी विद्रोह अंग्रेजों के शोषण का प्रभाव थे। कुछ प्रमुख विद्रोह निम्नलिखित हैं।

   1. धार्मिक विद्रोह - बंगाल में 1763 ई० में फकीरों एवं सन्यासियों ने विद्रोह किया। इसमें अधिकतर विद्रोही किसान थे। वे तीर्थ यात्रियों के वेश में घूमते रहते थे तथा उनके पास सेना भी थी। अंग्रेजों को उनका विद्रोह दबाने में 20 वर्ष का समय लगा।

   बहावियों द्वारा भी विद्रोह किया गया। सैय्यद अहमद बरेलवी ने इसका नेतृत्व किया। उन्होंने अपनी अंग्रेज विरोधी नीतियों को 1830 ई० से 1870 ई० तक जारी रखा, अंत में उन्हें दबाना पड़ा। दादू मियाँ ने फैराजी विद्रोह का नेतृत्व किया। मुसलमानों को उसने नील की खेती बंद करने तथा भूमि राजस्व न देने के लिए कहा। यह विद्रोह 1837 ई०-1848 ई० तक चलता रहा।

   2. पालीमार विद्रोह - दक्षिण भारत में पालीमार तिरुनेलवली के जमींदार थे जिन्होंने अंग्रेजों से बगावत की। उनके नेता को फाँसी दे दी गई तथा 1801 ई० में यह विद्रोह दबा दिया गया।

अन्य प्रमुख विद्रोहों में 1808 में त्रावणकोर के दीवान थांबी का विद्रोह, किट्टूर की रानी चेनम्मा का विद्रोह, अलीगढ़ के ताल्लुकदारों का, बिलासपुर के राजपूत और जबदपुर के बुंदेलों के विद्रोह थे लेकिन ये सभी विद्रोह दबा दिए गए।

3. स्थानीय शासकों एवं जमींदारों का विद्रोह – देशी राजाओं के राज्य अंग्रेजों द्वारा हड़प लिए जाने से अनेक जमींदार, सामंत और राजा मान-सम्मान, शक्ति और उच्च स्तर से वंचित हो गए। इस कारण उन्होंने अंग्रेजों से विद्रोह किए।

2. स्वयं कीजिए।

3. विद्रोह का प्रभाव

   1. ब्रिटिश सेनाओं ने अगस्त, 1858 ई० में कानून पारित कर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन भारत में समाप्त कर दिया तथा ब्रिटिश सम्राट को सौंप दिया।
   2. ब्रिटिश केबिनेट ने भारत के राज्य सचिव को समस्त शक्तियाँ दे दीं।
   3. गवर्नर जनरल को अब वायसराय कहा जाने लगा। लार्ड कैनिंग भारत के प्रथम वायसराय बनाए गए।
   4. महारानी की राजाज्ञा नवंबर, 1857 ई० में भारतीय राजाओं को आश्वस्त किया गया कि उनके क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं मिलाए जाएगें। 'गोद निषेध' नियम वापस ले लिया गया।
   5. सेना का पुनर्गठन किया गया, जाति एवं संप्रदायों के नाम पर रेजीमेंट बनाई गई। तोपखाने पर पूर्ण रूप से ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित हो गया। बंगाल की सेना का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया।
   6. जनता की धार्मिक तथा सामाजिक प्रथाओं में कोई हस्तक्षेप न करने का वादा किया गया।
   7. लंदन का सीधा नियंत्रण भारत पर हो गया। अंग्रेजों ने 'फूट डालो तथा राज करो' नीति अपनाई जिससे भारतीयों में एकता न हो सकी।

4. 1857 ई० के व्रिदोह की असफलता के मुख्य कारण निम्नलिखित थे:-

   1. विद्रोही सिपाहियों के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों की कमी थी। पारंपरिक हथियारों से वे ब्रिटिश सेना का सामना न कर सके। अंग्रेजों के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे।
   2. इस विद्रोह से संपूर्ण देश प्रभावित नहीं हुआ। अनेक

स्थानीय शासकों एवं जमींदारों के विद्रोह को समर्थन नहीं दिया। हैदराबाद, इंदौर, ग्वालियर, भोपाल, जोधपुर, पटियाला आदि के शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया।

3. विद्रोहियों का कोई सर्वमान्य नेता था। विद्रोही नेताओं के उद्देश्य भी अलग-अलग थे।
4. किसानों की विद्रोहियों ने उपेक्षा की तथा शिक्षित वर्ग भी इससे अलग रहा।
5. 31 मई, 1857 ई० को विद्रोह की तिथि निश्चिय की गई थीं किंतु इससे पहले ही विद्रोह आरम्भ हो गया जिस कारण संपूर्ण योजना बिगड़ गई। विद्रोह की तैयारी के लिए पर्याप्त समय न मिल सका।

5. **विद्रोह का प्रसार** – जल्दी ही यह विद्रोह मेरठ से दिल्ली अन्य स्थानों तक फैल गया।

1. दिल्ली – मेरठ से सैनिक दिल्ली की ओर चले। रास्ते में अनेक पैदल सैनिक तथा अनेक नागरिक भी उनके साथ चल दिए। दिल्ली के लाल किले पर उन्होंने अधिकार कर लिया और बहादुरशाह जफर को अपना सम्राट घोषित कर दिया बरेली में मुगल सेना के नायक बख्त खाँ ने भी विद्रोह कर दिया तथा वह अपनी सेना के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गया। 20 सितबंर, 1857 ई० को ब्रिटिश कमांडर निकल्सन ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। बहादुरशाह जफर, को बंदी बनाकर रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

2. कानपुर – पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किया। नाना साहब ने स्वयं को पेशवा घोषित कर अंग्रेजी सेना को कानपुर छोड़ने को बाध्य किया लेकिन जनरल हैवलॉक ने नाना साहब को हराकर सैकड़ों निहत्थे निर्दोष नागरिक, महिलाओं व बच्चों की हत्या कर दी। नाना साहब नेपाल चले गए तथा उसके सेनापति तात्या टोपे ने झाँसी को प्रस्थान किया।

3. लखनऊ – अवध की बेगम हजरत महल अपने नाबालिग पुत्र की संरक्षिका के रूप में शासन चला रहीं थीं। अपने सैनिकों में वीरता की भावना जगाकर उसने ब्रिटिश जनरल एवं उनके सैनिकों को रेजीडेंट

के भवन में बंधक बना लिया लेकिन कुछ महीनों बाद 1858 ई० में जनरल केपवैल ने उन्हें मुक्त करा दिया।

4. झाँसी – रानी लक्ष्मीबाई ने जरनल ह्यूरोज की सेना का कड़ा प्रतिरोध किया। कुछ विश्वासघातियों की सहायता से अंग्रेजों ने झाँसी पर अधिकार कर लिया। रानी कालपी चली गई मगर अंग्रेजों ने उस पर भी कब्जा कर लिया। उसके बाद लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे ने सिंधिया से ग्वालियर का किला जीत लिया। रानी लक्ष्मीबाई 17 जून, 1858 ई० को वीरता से लड़ती हुई देश पर शहीद हुई। सर ह्यूरोज ने उसे 'विद्रोहियों में सर्वोत्तम तथा सबसे बहादुर सैनिक नेता' कहकर प्रशंसा की। अंग्रेजों ने तात्या टोपे को बंदी बनाकर 18 अप्रैल, 1858 ई० को फाँसी दे दी।

5. आरा (बिहार)– जगदीशपुर के जमींदार ने बिहार में विद्रोह का नेतृत्व किया, जमींदार कुँवर सिंह 80 वर्ष के थे। अंग्रेजी सेना को उन्होंने अनेक स्थानों पर पराजित किया। युद्ध में लड़ते हुए वह अप्रैल, 1858 ई० को मारे गए।

6. रूहेलखंड – यहाँ विद्रोह का नेतृत्व खान बहादुर खान ने किया। वह मई, 1858 ई० में लड़ते हुए मारा गया।

7. फैजाबाद – मौलवी अब्दुल्ला ने फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व किया।

पाठ-1 : हमारा संविधान

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
2. भीम राव अम्बेडकर
3. 26 जनवरी 1950
4. 1961 ई० में

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. संघात्मक संविधान
2. बाल विवाह, दहेज प्रथा
3. वैध अंश
4. स्वतंत्र सरकार
5. डा० भीम राव अम्बेडकर

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. भारत का संविधान, भारत का सर्वोच्च विधाान है जो संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को पारित हुआ तथा 26 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ। यह दिन (26 नवम्बर) भारत के संविधान दिवस के रूप में घोषित किया गया है। जबकि 26 जनवरी का दिन भारत का गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।
2. एक धर्मनिरपेक्ष राज्य धर्मनिरपेक्षता से संबंधित एक विचार है, जिसके द्वारा एक राज्य, धर्म के मामलों में अधिकारिक तौर पर तटस्थ होने का दावा करता है, न तो धर्म और न ही अधर्म का समर्थन करता है।
3. भारतीय संविधान एक लिखित संविधान है। वर्तमान में इसमें 443 अनुच्छेद एवं 12 अनूसूचियाँ है। भारतीय संविधान विश्व का सर्वाधिक विशाल संविधान है।
4. संविधान सभा की स्थायी समिति के अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद थे।
5. हमारा संविधान 26 जनवरी सन् 1950 को नवीन संविधान सम्पूर्ण भारत संघ में लागू कर दिया गया।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. अपने समाज पर दृष्टिपात कीजिए। आप देखेंगे कि समाज में

अनेक प्रकार की बुराइयाँ एवं कुप्रथाएँ व्याप्त थीं। स्वतंत्रता से पूर्व हमारे संपूर्ण देश में अनेक प्रकार की कुप्रथाएँ विद्यमान थीं, जो भारत के कुछ भागों में आज भी प्रचलित हैं। अस्पृश्यता, जाति प्रथा, सती प्रथा, बाल श्रम जैसी अनेक अन्यायपूर्ण सामाजिक प्रथाओं के विषय में आपको सजग एवं जागरुक होना चाहिए। निम्न जातियों के प्रति उत्पीड़न एवं यातनापूर्ण व्यवहार जैसा अमानवीय कृत्य किए जाने का कोई औचित्यपूर्ण कारण नहीं है, जबकि संविधान में समाज के सभी वर्गों के लिए स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता का संकल्प लिया गया है। अस्पृश्यता की कुप्रथा उन लाखों लोगों की घोर पीड़ा का कारण थी, जिन्हें प्राचीनकाल से ही तुच्छ एवं प्रदूषित कार्य करने के लिए विवश किया जाता रहा था।

2. डॉ० बी० आर० अंबेडकर ने राज्य के नीति निर्देशक सिद्धातों को भारतीय संविधान की नवीन विशेषता बताया। ये सिद्धांत आयरलैंड एवं स्पेन के संविधानों से उद्धृत किए गए हैं। डॉ० के० सी० के शब्दों में, ये सिद्धात लक्ष्यों एवं आकांक्षाओं के घोषणा-पत्र हैं। ये कल्याणकारी राज्य के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का वर्णन करते हैं। आलोचकों ने इन सिद्धातों को समाजवादी, गाँधीवादी, उदारवादी, बुद्धिजीवी एवं अन्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। उदाहरणार्थ - कार्य का अधिकार स्त्री-पुरुष को समान कार्य के लिए समान वेतन, शोषण एवं नैतिक तथा भौतिक परित्याग के विरुद्ध बचपन एवं यौवन की सुरक्षा, कार्य करने के लिए मानवोचित परिस्थितियाँ तथा स्त्री-कर्मचारी का मातृत्व लाभ सामाजिक सिद्धांत है। अधिनियम 1976 ने इनमें कुछ अन्य निर्देश भी सम्मिलित किए हैं, जैसे -

   1. निर्धन व्यक्तियों के लिए निःशुल्क विधिक सहायता
   2. नागरिकों की सुरक्षा व्यवस्था
   3. समान न्याय एवं प्रबंधन में कर्मचारियों की सहभागिता हेतु प्रोत्साहन।

3. भारत ने संसदीय शासन प्रणाली को अंगीकार किया है। यद्यपि केंद्र सरकार का संचालन राष्ट्रपति एंव राज्य सरकार का संचालन राज्यपाल द्वारा किया जाता है, जो संवैधानिक अध्यक्ष है। यह व्यवस्था वास्तव में ब्रिटेन की राजतंत्रात्मक व्यवस्था के अनुरूप है, लेकिन केंद्र में वास्तविक शक्ति प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित मंत्रिपरिषद तथा राज्य में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित प्रांतीय मंत्रिपरिषद में निहित होती है। मंत्रिगण स्वंय से संबंधित विधायिका के प्रति उत्तरदायी होते हैं। वे निम्न सदन के विश्वास तक अपने पद पर बने रहते हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. कन्या के जन्म लेते ही परिवार में उसके प्रति भेदभाव प्रारम्भ हो जाता है। कन्या शिशु प्रायः भारतीयों में परिवारों में सम्मान नहीं पाते हैं। हमारे समाज में भारतीय स्त्रियाँ अनेक समस्याओं का सामना करती हैं। आज दहेज भारतीय समाज की गंभीर समस्या है। समाज में आए दिन बाल-विवाह, कन्या भ्रूण हत्या की घटनाएँ आज भी सुनी जाती हैं। आज भी समाज के अधिकांश परिवारों में कन्या को विपत्ति का स्त्रोत माना जाता है। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीय समाज ने स्त्री जाति में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना जाग्रत की। हमारे संविधान में स्त्री-पुरुष दोनों को प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकारों का प्रावधान किया गया है। संविधान के अनुसार समाज में दहेज की कुप्रथा को नियंत्रित करने के लिए दहेज लेन-देन की अनुमति नहीं दी गई है। इसलिए दहेज प्रतिबंध अधिनियम, 1961 पारित किया गया। अब दहेज का लेन-देन अपराध है।

2. संविधान को किसी सरकार की शक्ति एवं सत्ता का स्त्रोत समझा जाता है। यह संक्षेप में किसी सरकार की शक्तियों का विवरण है, जिसमें सरकारी संस्था को किसी विषय में अधिकार प्राप्त है तथा यह क्या कार्य कर सकता और क्या नहीं? इसका कार्य सरकार के अनेक अंगो के बीच भ्रांति एवं संघर्ष को न्यूनतम करना है। इसमें अपने नागरिकों के कल्याण के लिए अधिकतर शर्तों की सीमा निर्धारित करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण हैं। किसी भी देश के संविधान को देश में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होता है। सरकार समाज में व्यवस्था का दायित्व निभाती है। समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए उसके द्वारा कानूनों का निर्माण किया जाना आवश्यक है।

3. उद्देशिका में संविधान के अंतर्निहित विचारों एवं मौलिक सिद्धातों का वर्णन किया गया है, लेकिन, उद्देशिका संविधान का वैध अंश नहीं है। इसके लागू न होने पर न्यायालय की शरण में संरक्षण प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उद्देशिका में सरकार के उन उद्देश्यों तथा शासन प्रणाली का वर्णन है, जिनके, लिए भारत के संविधान में अपेक्षा की गई है। उद्देशिका में भारत को एक संप्रभु राष्ट्र घोषित किया गया है। संप्रभुता से अर्थ उस पूर्ण स्वतंत्र सरकार से है, जिस पर किसी अन्य शक्ति का नियत्रंण न हो। ब्रिटिश शासनकाल में भारत को एक संप्रभु राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था।

   1. यह भारत में प्रजातांत्रिक समाज की व्यवस्था करता है, जिसके परिणामस्वरूप भारत के प्रत्येक नागरिक को समान नागरिक एवं राजनैतिक अधिकार प्राप्त है।

2. हमारे देश में समाजवाद मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। वास्तव में, उद्देशिका में वर्णित समानता का सिद्धान्त तब तक निरर्थक है, जब तक कि देश में समाजवाद स्थापित न किया जाए।

3. इसमें भारत को प्रजातंत्र घोषित किया गया है। अतः भारत गणतंत्र का अध्यक्ष अर्थात् राष्ट्रपति एक निर्वाचित अध्यक्ष है।

4. कल्याणकारी राज्य से अभिप्रायः केवल राष्ट्र की जनता की सुरक्षा एवं नियंत्रण न होकर उसका कल्याण एवं प्रोत्साहन करना है। हमारे कल्याणकारी राज्य में सुनिश्चित समानता, स्वतंत्रता की सुरक्षा, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा, अल्पसंख्यकों तथा पिछडे वर्गों के हितों की रक्षा एवं समाज में स्त्रियों की सम्मानजनक स्थिति सुनिश्चित की गई है। अनुच्छेद 15, 16, 29, 30 एवं 46 सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों अथवा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों की प्रगति के लिए विशेष प्रावधान करते हैं तथा अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा एवं लिपि को संरक्षित रखने तथा समाज के कमजोर वर्गों के आर्थिक हितों की सुरक्षा करते हैं। हमारे राष्ट्र के कल्याणकारी कार्यों के संदर्भ में के० एम० मुंशी ने सही-सही टिप्पणी की थी, संविधान न केवल देशवासियों की भौतिक समृद्धि एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था बनाए रखना सुनिश्चित करता है, अपितु इस विषय में भी निरंतर ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जाए।

5. सती प्रथा एवं उसके यशोगान को प्रतिबंधित करता है। यह कानून सन् 1987 में रूप कँवर के० देवराला, राजस्थान में सती होने के पश्चात् पारित हुआ। सरकार शीघ्र ही एक नया कानून पारित करने की योजना बना रही है। इस कानून का लक्ष्य सती की घटना होने वाले संपूर्ण ग्राम को दंड़ित करना है। हमारे देश में घटता हुआ लिंगानुपात एक बहुत महत्त्वपूर्ण और चिंतनीय कारण है। इस समस्या के समाधान हेतु संसद द्वारा जन्म पूर्ण लिंग जाँच तकनीक नियमन एवं दुरुपयोग पर प्रतिबंध (पी०एन०डी०टी०) अधिनियम, 1996 में पारित किया गया। यह अधिनियम लिंग जाँच निर्धारण परीक्षण पर पूर्ण प्रतिबंध लगाता है। इसे प्रतिबंधित करने का एक मुख्य कारण यह था कि माता-पिता को कन्या भ्रूण की जैसे ही जानकारी हो जाती थी, वे जन्म से पूर्व ही उस भ्रूण को गर्भपात कराके मौत की नींद सुला देते थे। 29 मार्च, सन् 2006 को उपर्युक्त (पी०एन०डी०टी०) अधिनियम, 1996 के अंतर्गत न्यायालय द्वारा सर्वप्रथम दोष सिद्ध हरियाणा में 1997 में घटित हुई घटना में हुई। यदि इस अधिनियम को उचित प्रकार से क्रियान्वित किया

जाता है, तो इसके सकारात्मक परिणाम आऐंगे तथा यह अधिनियम उन लोगों के लिए चेतावनी होगी, जो इस प्रकार के अवैध कार्य का इरादा रखते हैं।

पाठ-2 : भारत एवं पड़ोसी देश

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. अच्छे
2. फाह्यान
3. बेलग्रेड में

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. मैकमोहन
2. भारत तथा चीन
3. 2001, पौंग
4. कश्मीरी, शरण

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, अरुणाचल प्रदेश के आधे से भी ज्यादा हिस्से पर चीनी पीपल्स लिबरेशन आर्मी के अस्थायी रुप से कब्जा कर लिया था उस वक्त। फिर चीन ने एकतरफा युद्ध विराम घोषित कर दिया और उसकी सेना मैकमोहन रेखा के पीछे लौट गई। भारत चीन युद्ध कठोर परिस्थितियों में हुई लडाई के लिए उल्लेखनीय हैं।
2. 1972 ई० में भारत और बांग्लादेश में 25 वर्ष के लिये मैत्री, सहयोग एवं शांति की एक संधि पर हस्ताक्षर किए थे।
3. आर्थिक रूप से अल्प विकसित राष्ट्र होने के बावजूद भूटान भारत के लिये भू सामरिक दृष्टि से सर्वोपरि है (विशेष रुप से भारत के 'चिकिन नेक कोरिडोर' में अवस्थित होने के कारण तथा यहाँ से नेपाल और बांग्लादेश की दूरी भी कम है।), इसके अलावा चीन के साथ विवादित सीमा भी भूटान के भू सामरिक महत्व को और भी बढा देती है।
4. भारत और पाकिस्तान के बीच स्वतंत्रता के समय से ही कश्मीर, भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद ही जड़ रहा है।
5. भारत एवं श्रीलंका के संबंधा अति प्राचीन कान में रहे है। सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्री लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये भेजा था। आज बौद्ध धर्म श्रीलंका का प्रमुख धर्म है। श्रीलंका से मैत्रीपूर्ण संबंधो की

खातिर भारत ने कच्छाविपु द्वीप श्रीलंका को सौंप दिया।

ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **भारत एवं पाकिस्तान** – पाकिस्तान का इतिहास, भूगोल, संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था भारत जैसी ही है। यह 1947 ई० के पूर्व अविभाजित भारत का अंग रहा है, किंतु विभाजन ने दोनों देशों के संबंधों को कटु बना दिया है। स्वतंत्रता के समय से ही कश्मीर, भारत तथा पाकिस्तान के बीच विवाद की जड़ रहा है।

   कश्मीर समस्या – भारतीय स्वतंत्रता, 1947 ई० के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर 585 देशी रियासतों में से एक था, जिन्हें भारत या पाकिस्तान में सम्मिलित होने या स्वतंत्र रहने का अधिकार दिया गया था। कश्मीर रियासत सांप्रदायिक सद्भाव का एक आदर्श उदाहरण था, जहाँ मुस्लिम, हिंदू व बौद्ध आपस में शांति से रहते थे।

   समस्या का प्रारम्भ 1947 ई० में पाक समर्थित कबाइलियों द्वारा कश्मीर रियासत पर आक्रमण के साथ हुआ। कश्मीर के शासक राजा हरिसिंह ने भारत में विलय पर हस्ताक्षर कर दिए और कश्मीर भारत का अंग बन गया। भारतीय फौजों को तुरंत कश्मीर भेजा गया। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान पर आक्रमण का आरोप लगाया। संयुक्त राष्ट्र ने जनवरी, 1949 ई० को युद्धविराम लागू करवाया। पाकिस्तान द्वारा अधिग्रहित कश्मीर को खाली कराने के भारत के आग्रह के बावजूद पाकिस्तान ने इसे खाली नहीं किया।

   चीनी समर्थन तथा अमेरिकी द्वारा शस्त्रों की आपूर्ति ने 1965 ई० में पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध युद्ध घोषित करने को प्रोत्साहित किया, किंतु पाकिस्तान विफल रहा। जनवरी 1966 ई० में भारत व पाकिस्तान विफल रहा। जनवरी 1966 ई० में भारत व पाकिस्तान ने ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किए और परस्पर विवादों को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए सहमत हो गए।

2. **भारत एवं नेपाल** – भारत के उत्तर में स्थित एक हिमालयी राज्य है, जहाँ संवैधानिक राजतंत्र प्रचलित रहा है। यह सब ओर से स्थल से घिरा देश है, जो भारत की आर्थिक सहायता पर मूलतः निर्भर है। भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टि से भारत तथा नेपाल के घनिष्ठ संबंध रहे हैं। नेपाल के पास अपना पत्तन न होने के कारण उसका समुद्री व्यापार भारत के माध्यम से होता है। नेपाल एक हिंदू राज्य है, अतः इसकी धर्म तथा संस्कृति भारत से गहरा संबंध रखती है। भारत नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाता रहा है।

भारत ने अपनी भूमि से किसी भी नेपाली विरोधी गतिविधि को समर्थन नहीं दिया। इसके बावजूद नेपाल भारत से दूर व चीन के निकट जाने लगा तथा उससे आर्थिक सहायता भी प्राप्त की भारत की इच्छा के विरुद्ध नेपाल के काठमांडु कोल्हासा से जोड़ने वाले राजमार्ग के निर्माण के लिए चीन से समझौता कर लिया। तनावपूर्ण संबंधों का यह दौर 1961 ई० तक चलता रहा। 1962 ई० में भारत पर चीनी आक्रमण के दौरान नेपाल तटस्थ रहा। 1962 ई० के बाद भारत-नेपाल संबंध सुधरे। 1964 ई० में भारत ने नेपाल को व्यापक आर्थिक सहायता देने के समझौते पर हस्ताक्षर किए। 1965 ई० व 1971 ई० में भारत-पाकिस्तान युद्ध में नेपाल ने भारत का समर्थन किया 1974 ई० में भी कई समझौते हुए, जिनके तहत् भारत नेपाल में सीमेंट, चीनी व इंजीनियरिंग के कारखाने लगाने, व करनाली परियोजना तथा देवीघाट परियोजना में सहायता देने को सहमत हुआ।

किन्तु 1975 ई० में सिक्किम के भारत में विलय से नेपाल के शासकों के मन में कुछ गलतफहमी पैदा होने से भारत-नेपाल संबंधों में कुछ गतिरोध पैदा हुआ। नेपाल ने निहित स्वार्थ के कारण भारत विरोधी भावनाओं को हवा देना व भड़काना जारी रखा। फिर भी भारत ने नेपाल के आर्थिक विकास के लिए सभी प्रकार की वित्तीय, तकनीकी तथा संसाधनों को सहायता प्रदान की है। भारत नेपाल में 204 किमी० लंबे महेंद्र राजमार्ग के निर्माण में भी सहयोग दे रहा है। नेपाल का विदेशी व्यापार कोलकाता पत्तन से होता है। 1990 ई० में नेपाल में लोकतंत्र बहाल होने से दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों में प्रगाढ़ता आई है।

3. **कश्मीर समस्या** - भारतीय स्वतंत्रता, 1947 ई० के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर 585 देशी रियासतों में से एक था, जिन्हें भारत या पाकिस्तान में सम्मिलित होने या स्वतंत्र रहने का अधिकार दिया गया था। कश्मीर रियासत सांप्रदायिक सद्भाव का एक आदर्श उदाहरण था, जहाँ मुस्लिम, हिंदू व बौद्ध आपस में शांति से रहते थे।

समस्या का प्रारम्भ 1947 ई० में पाक समर्थित कबाइलियों द्वारा कश्मीर रियासत पर आक्रमण के साथ हुआ। कश्मीर के शासक राजा हरिसिंह ने भारत में विलय पर हस्ताक्षर कर दिए और कश्मीर भारत का अंग बन गया। भारतीय फौजों को तुरंत कश्मीर भेजा गया। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान पर आक्रमण का आरोप लगाया। संयुक्त राष्ट्र ने जनवरी, 1949 ई० को युद्धविराम लागू करवाया। पाकिस्तान द्वारा अधिग्रहित कश्मीर को खाली कराने के भारत के आग्रह के बावजूद पाकिस्तान ने इसे खाली नहीं किया।

चीनी समर्थन तथा अमेरिकी द्वारा शस्त्रों की आपूर्ति ने 1965 ई० में पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध युद्ध घोषित करने को प्रोत्साहित किया, किंतु पाकिस्तान विफल रहा। जनवरी 1966 ई० में भारत व पाकिस्तान विफल रहा। जनवरी 1966 ई० में भारत व पाकिस्तान ने ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किए और परस्पर विवादों को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए सहमत हो गए।

1971 ई० में पुनः भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ। इसका कारण पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) व पश्चिमी पाकिस्तान के बीच दिसंबर 1970 ई० के आम चुनावों में शेख मुजीबुर्रहमान को आवामी लीग पार्टी द्वारा बहुमत प्राप्त करने पर पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान में गृह-युद्ध का छिड़ जाना था। लगभग एक करोड़ बंगाली मुस्लमानों ने भारत में शरण ली। मुक्ति-वाहिनी सेना ने पूर्वी पाकिस्तान के स्वतंत्र बांग्लादेश के निर्माण के लिए युद्ध किया। पड़ोस में लोकतंत्र की हत्या, भारी नरसंहार तथा बंगाली मुस्लमानों पर अत्याचारों के कारण भारत मूक दर्शक बनकर नहीं बैठ सकता था। इसके निर्माण से पाकिस्तान के सिद्धांत को करारा झटका लगा, जिसे वह जम्मू-कश्मीर में लागू करना चाहता है।

4. **भारत एवं चीन** - चीन के साथ भारत की सबसे लंबी सीमा-रेखा है। भारत और चीन के संबंध सदियों से चले आ रहे हैं। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध की स्थापना में बौद्ध धर्म की प्रमुख भूमिका रही है। फाह्यान, हवेत्सांग तथा ईत्सिंग जैसे बौद्ध विद्वानों ने ज्ञान की खोज के लिए भारत भ्रमण किया। भारत लगभग दो शताब्दियों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा, फिर 1947 ई० में यह स्वतंत्र हुआ। 1949 ई० में चीन में भी साम्यवादी क्रांति के बाद जनवादी सरकार स्थापित हुई। भारत ने इसका स्वागत ही नहीं किया बल्कि चीन को संयुक्त राष्ट्र में शामिल करने के लिए जोरदार वकालत भी की। अप्रैल 1945 ई० में भारत और चीन के बीच 'पंचशील' समझौते के तहत परस्पर मित्रता, सहयोग तथा सहअस्तित्व के लिए संधि भी हुई। इसके तहत भारत ने तिब्बत को चीन का भाग भी मान लिया। भारत-चीन के बीच सीमा विवाद के कारण यह समझौता किया गया। इससे भारत और चीन के संबंध तनावपूर्ण हो गए। चीन ने 1959 ई० में लद्दाख में भारतीय क्षेत्र में अनाधिकृत कब्जा कर लिया।

भारत में रह रहे तिब्बत के प्रवासी अभी भी तिब्बत की स्वतंत्रता की माँग कर रहे हैं। चीनी मानचित्रों में भारत के एक बड़े भू-भाग को चीन का भाग दर्शाने लगे। भारत के निरंतर विरोधों के बावजूद चीन ने इन्हें नहीं सुधारा। 1957 ई० से

भारत की सीमा में चीनी घुसपैठ व हमले होने लगे। तत्कालीन प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई ने 'नेफा' (जिसे अब अरूणाचल प्रदेश कहते हैं) पर आक्रमण किया तथा इसके कुछ भागों पर कब्जा कर लिया। इस युद्ध ने दोनों देशों के मैत्री संबंधों में कटुता उत्पन्न कर दी। 1965 ई० में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान चीन ने पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया।

फिर भी भारत ने भारत-चीनी संबंधों को सामान्य बनाने के लिए पहल की। 1979 ई० में तत्कालीन विदेशमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के चीन दौरे से भारत व चीन के बीच व्यापक समझ विकसित हुई। चीन के उत्तर-पूर्वी भारत के विद्रोहियों को मदद देना बंद कर दिया। इसके फलस्वरूप मुजीबुर्रमान को रिहा कर दिया गया और वे बांग्लादेश के प्रथम प्रधानमंत्री बने। 1988 ई० में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी चीन गए तथा 1991 ई० में चीनी प्रधानमंत्री ली-पेंग भारत आए। 1993 ई० में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव ने चीन की यात्रा की।

नवंबर 1996 ई० में चीन के राष्ट्रपति जियांग जैमिन ने भारत यात्रा की। यह चीन के राष्ट्राध्यक्ष का पहला दौरा था। 13 दिसंबर, 2001 ई० को भारतीय संसद पर आतंवादी हमले की निंदा की। कश्मीर समस्या के हल के लिए चीन ने भारत व पाकिस्तान में द्विपक्षीय वार्ता द्वारा हल निकालने का समर्थन किया है। वर्तमान में चीन भारत के साथ सीमा विवाद को हल करने तथा व्यापार व सांस्कृतिक संबंधों के विस्तार के लिए सहमत हैं। जनवरी 2001 ई० में वरिष्ठ चीनी नेता जी पोंग भारत आए। दोनों देश सीमा विवाद के न्यायोचित हल निकालने को तैयार हो गए। इस यात्रा का वास्तविक काम व्यापार के क्षेत्र में हुआ।

पाठ-3 : संयुक्त राष्ट्र संघ

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ये सभी
2. ये सभी
3. विजय लक्ष्मी पंडित
4. पाँच

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. 10
2. आठ
3. 15

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓

3. ✗ 4. ✓

5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. इस संस्था की स्थापना 7 अप्रैल 1948 को की गयी थी। इसका उद्देश्य संसार के लोगों के स्वास्थ्य का स्तर ऊँचा करना है। डब्लू०एच०ओ० का मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा शहर मे स्थित है।

2. परिणामस्वरुप 1920 ई० में राष्ट्र संघ (लींग ऑफ नेशंस) की स्थापना की गई।

3. संयुक्त राष्ट्र संघ के छः प्रमुख अंग है:- महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, सचिवालय एवं न्याय परिषद्।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्र महासभा: संयुक्त राष्ट्र महासभा के सदस्य देशों की संख्या 193 है। इसका मुख्यालय न्यूयार्क शहर, यू०एस०ए० में स्थित हैं।

2. चार्टर के अंतर्गत राष्ट्र के छह अंग हैं:-महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक और सामाजिक परिषद, न्याय परिषद्, अंतराष्ट्रीय न्यायालय तथा सचिवालय।

   महासभा : महासभा में सभी सदस्य राज्यों का प्रतिनिधित्व होता है, जिसमें प्रत्येक के पास मत का अधिकार है। यद्यपि एक सदस्य राष्ट्र अधिकतम पाँच प्रतिनिधियों को भेज सकता है। यह संयुक्त राष्ट्र का विचार-विमर्श करने वाला अंग है। इसके मुख्य कार्य हैं :-

   1. अन्य अंगों की शक्तियों और कार्यों पर चर्चा करना।

   2. सुरक्षा परिषद् के दस अस्थायी सदस्यों को चुनना।

   3. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों को चुनना।

   4. नए सदस्यों को प्रवेश देना तथा महासचिव को नियुक्त करना जो सचिवालय को नियंत्रित करता है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य** – संयुक्त राष्ट्र चार्टर इसका संविधान है। इसमें 10,000 शब्द, 111 धाराएँ तथा 19 अध्याय हैं। इसमें संघ के उद्देश्यों, सिद्धांतों तथा नियमों का उल्लेख है।
   1. अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा बनाए रखना।
   2. राष्ट्रों के बीच मैत्री संबंध बनाए रखना।

3. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को हल करने में सहयोग देना।

4. मानवाधिकारी तथा बुनियादी स्वतंत्रताओं के प्रति सम्मान बढ़ाना।

5. इन देशों के कार्यकलापों में उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामंजस्य बनाने हेतु एक मंच प्रदान करना।

अनुच्छेद 2 के अनुसार संस्था तथा उसके सदस्य अनुच्छेद में वर्णित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्ननिखित सिद्धांतों पर कार्य करेगें –

1. सभी सदस्य देशों की प्रभुता समानता पर आधारित हैं।

2. सभी सदस्य राष्ट्र घोषणा-पत्र में वर्णित अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करेंगे।

3. ये अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा एवं न्याय को खतरे में डाले बगैर अपने अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान खोजने के प्रयास करेंगे।

4. सदस्य देश, घोषणा-पत्र के अनुरूप ही सदस्य राष्ट्र संघ को हरसंभव सहायता देंगे।

5. संयुक्त राष्ट्र किसी सदस्य राष्ट्र के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

6. यू०एन० चार्टर के अनुसार ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने का प्रयास किया जाएगा।

2. **सुरक्षा परिषद** – सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह विश्व में शांति की रक्षा के लिए उत्तरदायी है। सुरक्षा परिषद् के 15 सदस्य हैं जिनमें से पाँच स्थायी सदस्य हैं और दस महासभा द्वारा चुने जाते हैं।

दस अस्थायी सदस्यों का निर्वाचन महासभा द्वारा किया जाता है। इसके प्रत्येक सदस्य के पास एक मत का अधिकार होता है। महत्त्वपूर्ण विषयों पर निर्णय के लिए सभी स्थायी सदस्यों के मत आवश्यक हैं। अपनी असहमति को प्रकट करने के लिए किसी स्थायी सदस्य द्वारा वोटों का प्रयोग करने पर कोई निर्णय नहीं किया जा सकता।

3. स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : न्यायपालिका

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. प्रथम सूचना रिपोर्ट 2. नई दिल्ली में

3. 31 4. 2,80,000

5. राष्ट्रपति

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. गुवाहाटी उच्च 2. सत्र

3. उच्च न्यायालय 4. जिला

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗ 2. ✓

3. ✗ 4. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. यह भारत का सर्वोच्च न्यायालय है जो नई दिल्ली में स्थित है। यह न्यायालय नई दिल्ली तिलक रोड स्थित 22 एकड जमीन के एक वर्गाकार भूखंड पर बनाया गया है।

2. मूल संविधान में सर्वोच्च न्यायालय में न्यायधीशों की कुल संख्या 33 न्यायधीश होते हैं। ये न्यायधीश 65 वर्ष की उम्र तक अपने पद पर रहते हैं।

3. मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति स्वंय राष्ट्रपति करता है। सर्वोच्च न्यायालय के अन्य न्यायधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति भारत के प्रमुख न्यायधीशों की सलाह से करता है।

4. न्यायपालिका के पास यह शक्ति भी होती है कि वह संसद द्वारा प्रस्तावित विशेष कानूनों को तोड सकती है यदि यह मानती है कि संविधान की मूलभूत संरचना का उललंघन हो रहा है तो यह न्यायिक समीक्षा कहलाती है।

5. संविधान ने किसी उच्च न्यायालय के न्यायधीश का कार्यकाल तय नही किया है। इसलिए कथन सही है। वह 62 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक पद संभालता है। उसकी आयु के बारे मे कोई भी प्रश्न भारत के मुख्य न्यायधीश से परामर्श के बाद राष्ट्रपति द्वारा तय किया जाता है और राष्ट्रपति का निर्णय अंतिम होता है।

6. उच्चतम न्यायालय का न्यायधीश होने के लिये व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए-

   1. वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 62 वर्ष से कम न हो।

   2. वह एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों में 10 वर्ष तक वकालत कर चुका हो या 10 वर्ष तक न्यायिक पद पर कार्य कर चुका हो।

3. राष्ट्रपति की दृष्टि मे वह एक प्रसिद्ध न्यायविद् रहा हो।

7. भारत में न्यायपालिका के सामान्य रूप से 3 स्तर पाए जाते हैं उच्चतम न्यायालय, जिला एवं सत्र न्यायालय।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. उच्च न्यायालय का न्यायाधीश होने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए -

   1. वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 62 वर्ष से कम न हो।

   2. वह एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों में 10 वर्ष तक वकालत कर चुका हो या 10 वर्ष तक न्यायिक पद पर कार्य कर चुका हो।

   3. राष्ट्रपति की दृष्टि में वह एक प्रसिद्ध न्यायविद् रहा हो।

2. लोक अदालत एक अस्थायी अदालत है जहाँ विवाह, तलाक, किराया, मोटर-वाहन, चालान, बीमा, अवैध निर्माण, परिवार, समाज आदि से संबंधित मुकदमों का फैसला किया जाता है। इसमें न कोई वकील, न कोई फीस लगती है तथा समय भी बहुत कम लगता है। इन अदालतों में अवकाश प्राप्त जज, राजपत्रित अधिकारी और समाज के सम्मानित व्यक्ति परामर्शदाताओं के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं।

   इसमें सामाजिक समझौते के आधार पर बिना किसी वकील के आपसी समझौता करा दिया जाता है। ये अदालतें चेतावनी और दण्ड की घोषणा करती हैं। 1988 ई0 में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में देश की प्रथम लोक अदालत का आयोजन किया गया था।

3. मौलिक अधिक्षेत्र के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय निम्नलिखित विवादों से संबंधित हैं :-

   1. संघ तथा एक या एक से अधिक राज्यों के मध्य विवाद।

   2. संघ तथा कोई भी राज्य/राज्यों एक ओर तथा दूसरी ओर एक या अधिक राज्यों के मध्य विवाद।

   3. दो या अधिक राज्यों के मध्य विवाद।

   यदि विवाद का एक पक्ष निचले न्यायालय के निर्णय से संतुष्ट नहीं है। तो यह उच्च न्यायालय में अपील कर सकता है। अपीली अधिक्षेत्र के अंतर्गत उच्च न्यायालय तीन प्रकार के मुकदमों में अपील सुनता है-दीवानी, अपराधिक तथा राजस्व मुकदमों में। यदि एक अधीन न्यायालय दोषी व्यक्ति को मौत की सजा सुना देता है तो उच्च न्यायालय में इसके विरोध में

अपील की जा सकती है। पर्यवेक्षक अधिक्षेत्र के अंतर्गत यह अपने अधीन सभी न्यायालयों के कार्यों का निरीक्षण करता है। सर्वोच्च न्यायालय की भाँति यह एक अभिलेख न्यायालय है और इसके निर्णयों को अधीन न्यायालयों के लिए अभिलिखित करता है ताकि इन निर्णयों को समान मुकदमों में आवश्यकता पड़ने पर हस्तांतरित किया जा सकें।

4. **राजस्व न्यायालय** – भू-राजस्व से संबंधित सारे मुकदमे राजस्व न्यायालय में तय किये जाते हैं। इन मुकदमों का फैसला करने के लिए राजस्व परिषद्, कमिश्नर (आयुक्त), जिला न्यायाधीश, एस0डी0एम0 तहसीलदार, नायब तहसीलदार अपनी अदालतें लगाते हैं। ये सभी अदालतें उच्च न्यायालय के अधीन कार्य करती हैं।

5. पुलिस राज्य में कानून व व्यवस्था को बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है। जब एक अपराध होता है तो पुलिस संदिग्ध के विरुद्ध एफ०आई०आर० दर्ज करके गिरफ्तार करती है या अपनी अभिरक्षा में रखती है। किंतु पुलिस यह निर्णय नहीं कर सकती कि वह अपराधी है या निरपराधी तथा उसे दंड नहीं दे सकती। उसके अपराधी या निरपराधी होने का निर्णय न्यायाधीश करता है। जब तक मुकदमें का निर्णय नहीं होता तब तक संदिग्ध व्यक्ति पुलिस की न्यायिक अभिरक्षा में रहता है। पुलिस का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किसी भी अपराध के विषय में हुई शिकायत की जाँच-पड़ताल करना है। जाँच-पड़ताल के अंतर्गत गवाह के कथन रिकॉर्ड किए जाते हैं तथा विभिन्न प्रकार के सबूत एकत्र किए जाते हैं। जाँच-पड़ताल के आधार पर, पुलिस को एक विचार बनाने की आवश्यकता होती है। यदि पुलिस सोचती है कि साक्ष्य (सबूत) गिरफ्तार व्यक्ति के अपराध की और संकेत कर रहे हैं तो वे अदालत में एक अभियोग-पत्र प्रस्तुत करते हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **पुलिस की भूमिका** – पुलिस राज्य में कानून व व्यवस्था को बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है। जब एक अपराध होता है तो पुलिस संदिग्ध के विरुद्ध एफ०आई०आर० दर्ज करके गिरफ्तार करती है या अपनी अभिरक्षा में रखती है। किंतु पुलिस यह निर्णय नहीं कर सकती कि वह अपराधी है या निरपराधी तथा उसे दंड नहीं दे सकती। उसके अपराधी या निरपराधी होने का निर्णय न्यायाधीश करता है। जब तक मुकदमें का निर्णय नहीं होता तब तक संदिग्ध व्यक्ति पुलिस की न्यायिक अभिरक्षा में रहता है। पुलिस का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किसी भी अपराध के विषय में हुई शिकायत की जाँच-पड़ताल करना है। जाँच-पड़ताल के अंतर्गत गवाह के कथन रिकॉर्ड किए जाते हैं

तथा विभिन्न प्रकार के सबूत एकत्र किए जाते हैं। जाँच-पड़ताल के आधार पर, पुलिस को एक विचार बनाने की आवश्यकता होती है। यदि पुलिस सोचती है कि साक्ष्य (सबूत) गिरफ्तार व्यक्ति के अपराध की और संकेत कर रहे हैं तो वे अदालत में एक अभियोग-पत्र प्रस्तुत करते हैं।

लोक अदालत – लोक अदालत एक अस्थायी अदालत है जहाँ विवाह, तलाक, किराया, मोटर-वाहन, चालान, बीमा, अवैध निर्माण, परिवार, समाज आदि से संबंधित मुकदमों का फैसला किया जाता है। इसमें न कोई वकील, न कोई फीस लगती है तथा समय भी बहुत कम लगता है। इन अदालतों में अवकाश प्राप्त जज, राजपत्रित अधिकारी और समाज के सम्मानित व्यक्ति परामर्शदाताओं के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं।

इसमें सामाजिक समझौते के आधार पर बिना किसी वकील के आपसी समझौता करा दिया जाता है। ये अदालतें चेतावनी और दण्ड की घोषणा करती हैं। 1988 ई0 में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में देश की प्रथम लोक अदालत का आयोजन किया गया था।

2. **फौजदारी कानून**

1. ये ऐसे व्यवहार या क्रियाओं से संबंधित हैं जिन्हें कानून में अपराध माना गया है। उदाहरण के लिए- चोरी, दहेज के लिए औरत को तंग करना, हत्या आदि।

2. इसमें सबसे पहले आमतौर पर प्रथम सूचना रिपोर्ट/प्राथमिकी (एफ०आई०आर०) दर्ज कराई जाती है। इसके बाद पुलिस अपराध की जाँच करती है और अदालत में केस फाइल करती हैं।

3. अगर व्यक्ति दोषी पाया जाता है तो उसे जेल भेजा जा सकता है और उस पर जुर्माना भी किया जा सकता है।

दीवानी कानून

1. इसका संबंध व्यक्ति विशेष के अधिकारों के उल्लंघन या अवहेलना से होता है। उदाहरण के लिए- जमीन की बिक्री, चीजों की खरीदारी, किराया, तलाक आदि से संबंधित विवाद।

2. प्रभावित पक्ष की ओर से न्यायालय में एक याचिका दायर की जाती है। अगर मामला किराए से संबंधित है तो मकान मालिक या किराएदार मुकदमा दायर कर सकता है।

3. अदालत राहत की व्यवस्था करती है। उदाहरण के लिए- अगर मकान मालिक और किराएदार के बीच विवाद है तो अदालत यह आदेश दे सकती है कि किराएदार मकान को

खाली करें और बकाया किराया चुकाए।

3. **उच्चतम न्यायालय की शक्तियाँ** – न्यायालय द्वारा विभिन्न प्रकार के मुकदमों में विभिन्न प्रकार के अधिक्षेत्रों का प्रयोग किया जाता है, जैसे:–मौलिक, अपीली, परामर्शदात्री तथा पर्यवेक्षक। उच्चतम न्यायालय अभिलेख न्यायालय के रूप में भी कार्य करता है। उच्चतम न्यायालय की शक्तियों की चर्चा करने से पहले आइए समझते हैं कि इन प्रत्येक अधिक्षेत्रों का अर्थ क्या है :–

1. एक न्यायालय उन मुकदमों में मौलिक अधिक्षेत्रों को अपनाता है जो मुकदमें केवल उस न्यायालय में पहली बार सुने जा सकते हैं। यह अधिक्षेत्र न्यायालय में आवेदन करता है जहाँ मुकदमा प्रारम्भ होता है।

2. एक न्यायालय अपीली अधिक्षेत्र का उपयोग तब करता है जब यह उस मुकदमें के विरुद्ध एक अपील सुनता है जिसका निर्णय करने का प्रयास एक निचली अदालत पहले ही कर चुकी हैं।

3. एक न्यायालय परामर्शदात्री अधिक्षेत्र का उपयोग तब करता है जब यह संविधान से संबंधित मामलों पर सलाह देता है।

4. एक न्यायाधीश पर्यवेक्षक अधिक्षेत्र का उपयोग तब करता है जब यह निचले न्यायालयों के कार्यों का निरीक्षण करता है।

5. एक न्यायालय अभिलेख–न्यायालय के रूप में कार्य करता है जब यह न्यायालय की सुनवाई व निर्णयों के अभिलेखों को व्यवस्थित रखता है। ऐसा निचले न्यायालयों के लाभ के लिए किया जाता है जो इसे समान मुकदमों के लिए हस्तांतरित करता है। उच्चतम न्यायालय उपर्युक्त वर्णित सभी अधिक्षेत्रों का उपयोग करता है आइए अब हम अध्ययन करें कि एक उच्चतम न्यायालय किस प्रकार इन अधिक्षेत्रों को कार्यान्वित करता है।

पाठ–5 : सार्वजनिक सुविधाएँ

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. ये सभी
2. सरकार
3. ये सभी
4. ये सभी,
5. ये दोनों

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. मकान, वस्त्र
2. लोकतांत्रिक
3. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों
4. जल

5. प्राइवेट/निजी कंपनियों

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓ 2. ✓
3. ✓ 4. ✓

घ. मिलान करो -

1. मौलिक सुविधा 2. सार्वजनिक टॉयलेट
3. स्वास्थ्य सुरक्षा 4. सार्वभौमिक जल पहुँच
5. जल की आपूर्ति

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मानव को कुछ आवश्यक विधाओं; जैसे:-जल, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। इनके साथ कुछ अन्य सुविधाएँ; जैसे:-बिजली, सार्वजनिक यातायात, विद्यालय और कॉलिज, सार्वजनिक पार्क आदि भी आवश्यक हैं। ये सभी सुविधाएँ सार्वजनिक सुविधाएँ हैं।
2. जल की आपूर्ति के लिए सरकार को जल को निकालने इसे लंबी दूरी तक ले जाने, वितरण के लिए पाइप बिछाने, जल की अशुद्धियों का इलाज करने और अंत में व्यर्थ जल को एकत्रित करने और शुद्ध करने के लिए खर्चा करना पड़ता है। यह इसकी पूर्ति आंशिक रूप से विभिन्न करों जिन्हें यह इकट्ठा करती है और आंशिक रूप से जल के लिए एक मूल्य लगाकर इकट्ठा करती है। यह मूल्य इस प्रकार रखा जाता है कि अधिकतर लोग दैनिक प्रयोग के लिए जल मात्रा के लिए कुछ न्यूनतम मूल्य वहन कर सकें।
3. जल, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता, बिजली और सार्वजनिक यातायात आधुनिक समाज सार्वजानिक सुविधाएँ हैं।
4. सरकारी बचट गत वर्ष में सरकार इसके कार्यक्रमों पर खर्च किये गये धन और आगामी वर्ष में योजनाओं पर खर्च होने वाले खर्चों का एक ब्यौरा है।
5. सरकार

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. जल की आपूर्ति के लिए सरकार को जल को निकालने इसे लंबी दूरी तक ले जाने, वितरण के लिए पाइप बिछाने, जल की अशुद्धियों का इलाज करने और अंत में व्यर्थ जल को एकत्रित करने और शुद्ध करने के लिए खर्चा करना पड़ता है। यह इसकी पूर्ति आंशिक रूप से विभिन्न करों जिन्हें यह इकट्ठा करती है और आंशिक रूप से जल के लिए एक मूल्य

लगाकर इकट्ठा करती है। यह मूल्य इस प्रकार रखा जाता है कि अधिकतर लोग दैनिक प्रयोग के लिए जल मात्रा के लिए कुछ न्यूनतम मूल्य वहन कर सकें।

2. जल से उत्पन्न होने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए सुरक्षित पीने के पानी के अतिरिक्त स्वच्छता भी जरूरी है। यद्यपि भारत में स्वच्छता का विस्तार जल की तुलना में कम है। 2001 के अधिकारिक आँकड़ें दर्शाते हैं कि भारत में 68 प्रतिशत घरों में पीने का पानी और लगभग 36 प्रतिशत स्वच्छता उपलब्ध है (निवास स्थान के प्रागंण में टॉयलेट सुविधाएँ)। एक बार फिर, पिछड़े और अरबन दोनों क्षेत्रों में स्वच्छता सुविधाओं की कमी है।

   सुलभ, एक गैर-सरकारी संस्था, लगभग तीन दशकों से भारत की निम्न जाति निम्न-आय वर्ग के लोगों द्वारा स्वच्छता से होने वाली समस्याओं का सामना करने के लिए संबोधित कर रही है। इस संस्था ने 7500 से भी अधिक सार्वजनिक टॉयलेट ब्लॉक। खंड और 1-2 मिलियन निजी टॉयलेट बनाकर 10 मिलियन लोगों को स्वच्छता सुविधा प्रदान की है।

3. सरकार की आय का शुल्क स्रोत लोगों से इकट्ठा किए गए कर हैं और सरकार इन करों को इकट्ठा करने और उन्हें ऐसे कार्यक्रमों पर प्रयुक्त करने की शक्तियाँ रखती है। उदाहरणार्थ जल की आपूर्ति के लिए सरकार को जल को निकालने इसे लंबी दूरी तक ले जाने, वितरण के लिए पाइप बिछाने, जल की अशुद्धियों का इलाज करने और अंत में व्यर्थ जल को एकत्रित करने और शुद्ध करने के लिए खर्चा करना पड़ता है। यह इसकी पूर्ति आंशिक रूप से विभिन्न करों जिन्हें यह इकट्ठा करती है और आंशिक रूप से जल के लिए एक मूल्य लगाकर इकट्ठा करती है। यह मूल्य इस प्रकार रखा जाता है कि अधिकतर लोग दैनिक प्रयोग के लिए जल मात्रा के लिए कुछ न्यूनतम मूल्य वहन कर सकें।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. स्वयं कीजिए।

2. जल से उत्पन्न होने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए सुरक्षित पीने के पानी के अतिरिक्त स्वच्छता भी जरूरी है। यद्यपि भारत में स्वच्छता का विस्तार जल की तुलना में कम है। 2001 के अधिकारिक आँकड़ें दर्शाते हैं कि भारत में 68 प्रतिशत घरों में पीने का पानी और लगभग 36 प्रतिशत स्वच्छता उपलब्ध है (निवास स्थान के प्रागंण में टॉयलेट सुविधाएँ)। एक बार फिर, पिछड़े और अरबन दोनों क्षेत्रों में स्वच्छता सुविधाओं

की कमी है।

सुलभ, एक गैर-सरकारी संस्था, लगभग तीन दशकों से भारत की निम्न जाति निम्न-आय वर्ग के लोगों द्वारा स्वच्छता से होने वाली समस्याओं का सामना करने के लिए संबोधित कर रही है। इस संस्था ने 7500 से भी अधिक सार्वजनिक टॉयलेट ब्लॉक। खंड और 1-2 मिलियन निजी टॉयलेट बनाकर 10 मिलियन लोगों को स्वच्छता सुविधा प्रदान की है। सुलभ सुविधाओं का प्रयोग करने वाले अधिकतर लोग गरीब कामगार वर्ग से हैं। सुलभ नगरपालिकाओं अथवा अन्य स्थानीय अधिकारियों से सरकारी पैसे से टॉयलेट खंड बनाने के लिए ठेका लेती है। स्थानीय अधिकारी सेवाओं को बनाने में भूमि और धन प्रदान करते हैं। जबकि मरम्मत खर्च कभी-कभी प्रत्येक शुल्क द्वारा उपलब्ध कराया जाता है (उदाहरणार्थ, शहरों में पाखानों के लिए प्रयोग के लिए शुल्क लिया जाता है।)

पाठ-6 : आतंकवाद

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ये सभी
2. समर्थन
3. दो दिन तक

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. राष्ट्रीय अधिसूचना
2. ब्लैकटोंरटो
3. वैमनस्यता
4. 5 नवम्बर 2019

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✗
4. ✓

घ. अंतर स्पष्ट कीजिए -

1. भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों असम, अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा एवं मेघालय की सामाजिक स्थिति अति महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इन राज्यों की सीमाएँ भूटान, चीन, बांग्लादेश तथा म्यांमार से मिली हुई हैं। इन राज्यों में अनेक जनजातियाँ रहती हैं। वे जनजातियाँ अनेक प्रजातीय समूह की हैं, किसी एक भाषा अथवा धर्म में बँधी हुई नहीं है। मंगोल जाति से संबंध रखना और भौगोलिक दृष्टि से समीप होना उनकी बुनियादी एकता का मुख्य सूत्र है। भारत का यह भाग प्रजातीय विवादों, सीमा विवाद, सांप्रदायिकता एवं अप्रवास के कारण बहुत अशांत है। सीमा पार से आतंकवाद और विदेशी एजेंसियों

का सहयोग प्राप्त हो रहा है। उत्तर पूर्व के विद्रोह को आतंकवाद/प्रजातीय विद्रोह का नाम दिया जाता है।

2. **क्रांतिकारी**

1. इसका उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरुद्ध अघोषित युद्ध था।

2. इनकी गतिविधियों से निरीह जनता को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती थी।

3. क्रांतिकारी गतिविधियों से सामान्य जन-धन की हानि कम होती थी।

आतंकवादी

1. इनका उद्देश्य चुनी हुई सरकार को उखाड़ फेंकना होता है। इनका लक्ष्य सामूहिक हित से जुड़ा नहीं होता है।

2. अब आतंक पैदा करके निरीह जनता को मारना आतंकवाद का पर्याय बन गया है।

3. आतंकवादी हिंसा फैलाकर जन-धन का नुकसान सर्वाधिक करते हैं। ये जनता, राष्ट्रीय संपत्ति को मुख्य निशाना बनाते हैं।

3. **विद्रोह** - विद्रोह राष्ट्रीय सीमा तक ही सीमित होता है और यह अपनी ही निर्वाचित संवैधानिक सरकार के विरुद्ध होता है। विद्रोह को स्थानीय लोगों का समर्थन मिल भी सकता है जबकि आतंकवाद का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय हो सकता है और यह अपने या दूसरे देश के खिलाफ कार्य करता है। आतंकवाद को अपने देश तथा जनता का समर्थन मिल भी सकता है और नहीं भी।

आतंकवाद - पिछले लगभग 22 वर्षों में भारत के लिए आतंकवाद एक चुनौती बन गया है। कुछ बेरोजगार युवक आतंकवादियों के शिकंजे में फँस जाते हैं और अपना जीवन बरबाद कर लेते हैं। भारत में आतंकवाद का सृजन कुछ क्षेत्रीय एवं सांप्रदायिक आधार पर हुआ है। शताब्दी के 8 दशक में आतंकवाद ने पंजाब को अपने चंगुल में बुरी तरह जकड़े रखा। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1984 में हत्या पंजाब के इस आतंकवाद का ही परिणाम थी। आतंकवाद के कारण ही पंजाब के संत लोगोवाल और बेअंत सिंह की हत्या हुई।

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. भारत में तीन प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों को देखा जा सकता है।
2. क्रांतिकारी और आतंकवादी उद्देश्य में एक अंतर है।
3. आंतकवाद का अर्थ है अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आंतकित करने के लिए

हिसांत्मक कार्यवाही करना आतंकवाद की परिभाषा है।

च. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत के कई राज्यों में यह एक गंभीर समस्या है। इसका उद्‌भव पश्चिम बंगाल से हुआ। वस्तुतः नक्सलवाद एक आंदोलन, एक मिशन है, जिसका मकसद शुरूआती दौर में अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था। शुरूआत में ये आदिवासियों के द्‌वारा भू–स्वामियों के विरुद्ध उठाई गई आवाज से जानी जाती है। इससे इनकी आतंकवादी गतिविधियों में कमी आई हैं। लेकिन आज ये अपने मिशन में भटक गए हैं और जनता में आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं। इनकी गतिविधियों के बारे में आए दिन हम समाचार–पत्रों में पढ़ते रहे हैं। इनके द्‌वारा आंध्र प्रदेश के कई इलाकों में की गई आतंकवादी कार्यवाही, छत्तीसगढ़ में 78 जवानों की निर्मम हत्या, जहानाबाद जले ब्रेक, झारखंड में रेलगाड़ी अपहरण कांड, छत्तीसगढ़ में वाड़ा जेल आदि की घटनाएँ दिल दहला देने वाली हैं। नक्सली आतंक से देश के 16 राज्यों के 182 जिले प्रभावित हैं। बिहार, झारखंड, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ नक्सली आतंक से अति प्रभावित राज्य हैं।

2. आतंकवाद का अर्थ है, अपने राजनैतिक उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आतंकित करने के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना। विश्व में सैकड़ों की संख्या में ऐसे आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं।

   भारत में आतंकवाद – पिछले लगभग 22 वर्षों में भारत के लिए आतंकवाद एक चुनौती बन गया है। कुछ बेरोजगार युवक आतंकवादियों के शिकंजे में फँस जाते हैं और अपना जीवन बरबाद कर लेते हैं। भारत में आतंकवाद का सृजन कुछ क्षेत्रीय एवं सांप्रदायिक आधार पर हुआ है। शताब्दी के 8 दशक में आतंकवाद ने पंजाब को अपने चंगुल में बुरी तरह जकड़े रखा। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1984 में हत्या पंजाब के इस आतंकवाद का ही परिणाम थी। आतंकवाद के कारण ही पंजाब के संत लोगोवाल और बेअंत सिंह की हत्या हुई।

3. इसका उद्‌भव पश्चिम बंगाल से हुआ। वस्तुतः नक्सलवाद एक आंदोलन, एक मिशन है, जिसका मकसद शुरूआती दौर में अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था। शुरूआत में ये आदिवासियों के द्‌वारा भू–स्वामियों के विरुद्ध उठाई गई आवाज से जानी जाती है। इससे इनकी आतंकवादी गतिविधियों में कमी आई हैं। लेकिन आज ये अपने मिशन में भटक गए हैं और जनता में आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं। इनकी

गतिविधियों के बारे में आए दिन हम समाचार-पत्रों में पढ़ते रहे हैं। इनके द्वारा आंध्र प्रदेश के कई इलाकों में की गई आतंकवादी कार्यवाही, छत्तीसगढ़ में 78 जवानों की निर्मम हत्या, जहानाबाद जले ब्रेक, झारखंड में रेलगाड़ी अपहरण कांड, छत्तीसगढ़ में वाड़ा जेल आदि की घटनाएँ दिल दहला देने वाली हैं। नक्सली आतंक से देश के 16 राज्यों के 182 जिले प्रभावित हैं।

छ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. 26 नवंबर, 2008 को मुंबई में कई स्थानों, जैसे:-ताज होटल, ओबरॉय होटल, सी०एस०टी० टर्मिनल एवं नरीमन पर यहूदियों के आवासीय काम्पलेक्स में हमला हुआ। ऑपरेशन ब्लैक टोरंटो के तहत बंधकों को छुड़ाने की कार्यवाही हुई। इसमें 9 आतंकवादी मारे गए और एक को जिंदा पकड़ा गया। इस घटना में 162 से अधिक लोग मारे गए और 100 से अधिक घायल हुए। 2 दिनों तक भय और आतंक का साया मुंबई में छाया रहा था। संयुक्त राष्ट्र भी आतंकवाद की समस्या से जागरुक है। 28 सितंबर 2001 को सुरक्षा परिषद् ने प्रस्ताव को पास किया। भारत के मुंबई में आतंकवादी घटना देखते हुए एक राष्ट्रीय अभिसूचना एजेंसी का गठन किया गया है, जिसने 11 जनवरी, 2009 से कार्य करना प्रारंभ कर दिया है।

2. **भारत में आतंकवाद** -

पिछले लगभग 22 वर्षों में भारत के लिए आतंकवाद एक चुनौती बन गया है। कुछ बेरोजगार युवक आतंकवादियों के शिकंजे में फँस जाते हैं और अपना जीवन बरबाद कर लेते हैं। भारत में आतंकवाद का सृजन कुछ क्षेत्रीय एवं सांप्रदायिक आधार पर हुआ है। शताब्दी के 8 दशक में आतंकवाद ने पंजाब को अपने चंगुल में बुरी तरह जकड़े रखा। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1984 में हत्या पंजाब के इस आतंकवाद का ही परिणाम थी। आतंकवाद के कारण ही पंजाब के संत लोगोवाल और बेअंत सिंह की हत्या हुई।

भारत के कुछ भागों में जनजातियों एवं नक्सलवादियों द्वारा आतंक फैलाया जाता है। जनजातियों में विद्रोह का कारण अपनी पहचान बनाए रखने की प्रवृत्ति है। ये जनजातियाँ या तो राज्यों की सीमा को लेकर विद्रोह करती हैं या वे भारत से अलग होकर अपना अलग अस्तित्व कायम रखना चाहती हैं। ये विद्रोह अन्य आतंकवादियों से भिन्न हैं। ये विद्रोह उत्तर-पूर्वी राज्यों में होते हैं। उत्तर-पूर्व के राज्य सुरक्षा की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इन राज्यों की सीमाएँ चीन, भूटान, म्यांमार तथा

बांग्लादेश से मिलती हैं। स्वतंत्रता के समय यह क्षेत्र असम और कुछ देशी रियासतों जैसे मणिपुर एवं त्रिपुरा से बना था। इन विद्रोही घटनाओं पर काबू पाने के लिए इस क्षेत्र में कई राज्य बने–असम, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम एवं अरूणाचल प्रदेश। हालांकि इस विभाजन से कुछ आतंकवादियों की गतिविधियों (विद्रोहियों) पर नियंत्रण हो गया है परंतु अभी भी कुछ विद्रोही गतिविधियाँ चल रही हैं। नागा लोग यह माँग कर रहे हैं कि नागा जाति के लोग जो असम, मणिपुर, अरूणाचल तथा म्यांमार में रह रहे हैं, इन क्षेत्रों को मिलाकर एक वृहत्त नागालैंड बनाया जाए। नागा और मणिपुर की कुकि जनजातियों के बीच कुछ हिंसात्मक संघर्ष भी हुए हैं। त्रिपुरा की जनजातियों द्वारा इसलिए विद्रोह किए जाते हैं क्योंकि उनकी माँग है कि त्रिपुरा से गैरजनजातियों के लोगों को बाहर निकाला जाए। कई विद्रोही संगठन असम में भी कार्यरत हैं।

1. जातीय विद्रोह
2. नक्सलवादी आतंकवाद
3. सांप्रदायिक आतंकवाद